WWW.VITHIKA.ORG

DOI : 10528/zenodo.11063568

वीथिका ई पत्रिका

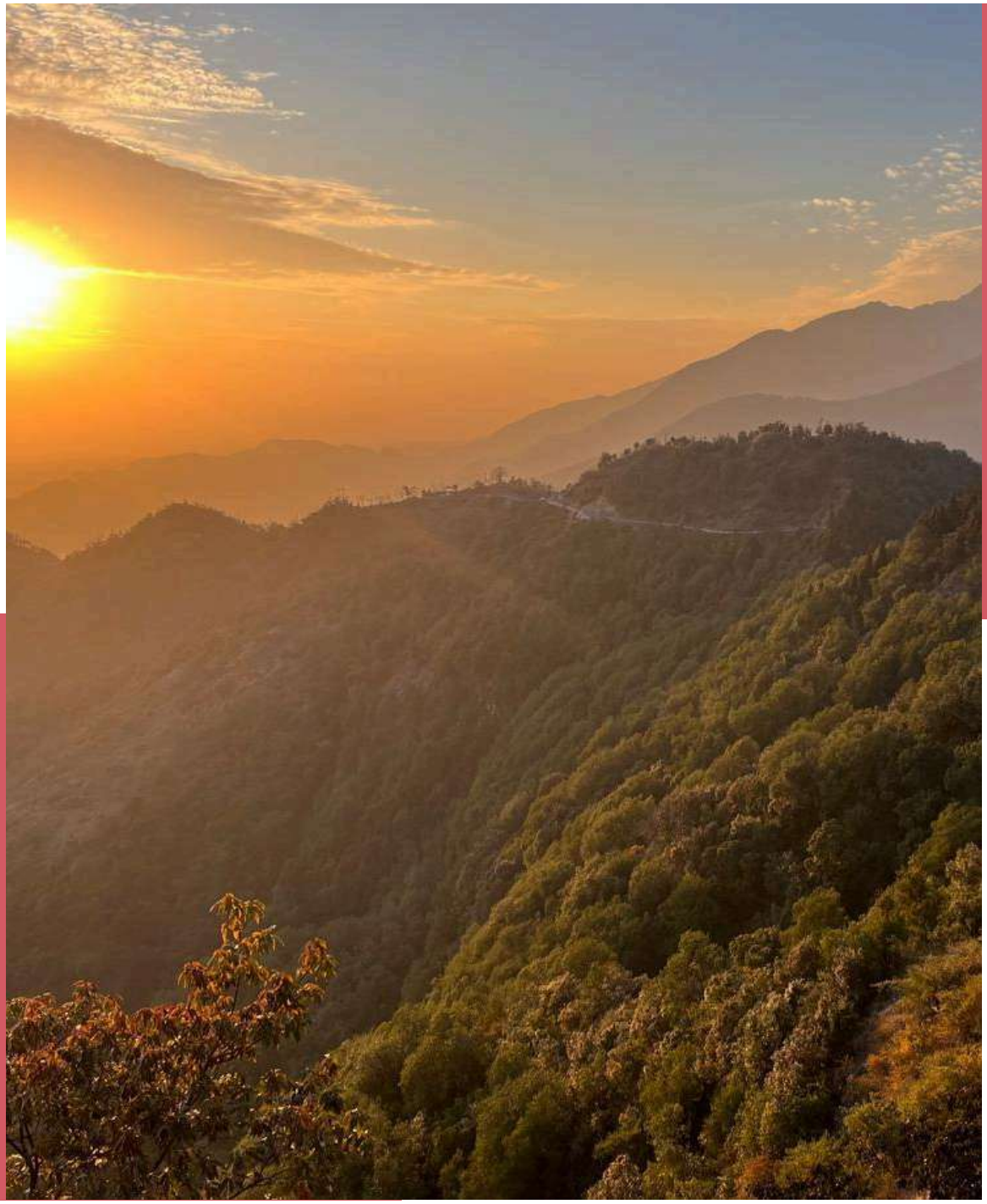

अंक 12 : जून, 2024

पर्यावरण विशेषांक

माँ कह एक कहानी

वीथिका ई पत्रिका

साहित्य, संस्कृति, कला विज्ञान

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

चित्रा मोहन
मुख्य सलाहकार संपादक

सुमित उपाध्याय
प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संरक्षक समिति
प्रो. विनय मिश्र
प्रो. प्रभाकर सिंह
डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
डॉ. आशुतोष तिवारी

वरिष्ठ सह संपादक
डॉ. सुधांशु लाल

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

प्रकाशक
उज्जवल उपाध्याय
यशिका फाउंडेशन, मऊ

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
डॉ अरुण कुमार सिंह
डॉ धनञ्जय शर्मा
श्री मनोज कुमार सिंह
एड. सत्यप्रकाश सिंह
श्री बृजेश गिरि
श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
अर्चिता उपाध्याय

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

सलाहकार परिषद
डॉ अखिलेश पाण्डेय
डॉ शिवमूरत यादव

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख
लेखक के अपने विचार हैं

आपकी वीथिका

अंक 12

जून , 2024

गलियों की बात — सम्पादकीय — 04

लद्दाख — 05

प्रस्तावना : पर्यावरण विमर्श — डॉ धनञ्जय शर्मा — 06

विश्व पर्यावरण दिवस — कैप्टन डॉ जय महलवाल — 09

हमारी पृथ्वी — सोनल मंजू श्री ओमर — 11

पर्यावरण संरक्षण : महिलाओं का योगदान — डॉ नन्द किशोर शाह — 13

ग्लोबल वार्मिंग और इसके प्रभाव — डॉ एस. पी.सती — 14

जल संवर्धन की दिशा में कदम — नरेश सिंह — 17

उत्तराखंड में वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन — प्रियंका ठाकुर — 20

रमेश गौतम के नवगीतों में नदी — डॉ नितिन सेठी — 22

ताजे पानी की झील : करेरी झील — डॉ जय महलवाल — 25

सोंधी मिट्टी : कवितायेँ — 28

प्रीति चौधरी, नमिता राकेश, रेणु सिंह राधे, मीता लुनिवाल

आशी प्रतिभा दुबे, रंजना बिनानी काव्या

किताबें और जादू — पियूष गोयल — 33

वीथिका ई पत्रिका

गलियों की बात

जून, 2024

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

प्रकृति हमारी माँ है, इसने ही हमें बनाया, सजाया, जीना सिखाया। हम मनुष्यों ने हमेशा माँ से बस माँगा, माँ ने कभी हमें मना नही किया। जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं से कहीं आगे बढ़ कर हमने निर्मम तरीके से माँ से सब छीन लिया, कभी सोचा भी नहीं कि माँ कहाँ से लाएगी। आज जब प्रकृति स्वयं को संतुलित करने में लगी है तो हम उसे आपदा का नाम दे रहे। मई-जून माह में उत्तर भारत ने भयानक गर्मी झेली और इसका मुख्य कारण पेड़ों का अंधाधुंध कटाव था। विकास और पर्यावरण के बहस में हम कहाँ खड़े होंगे, इस बात से हम सब अनजान ही है। प्रस्तुत अंक आपकी वीथिका ई पत्रिका के एक वर्ष पूर्ण होने के साथ आ रहा है। प्रकृति पूर्णता की द्योतक है, और यही पूर्णता इसे सुन्दर भी बनाती है।

यह अंक पर्यावरण पर केन्द्रित किया जा रहा है जिसमें प्रकृति माँ की कहानी अलग-अलग रूपों-शब्दों में आपके समक्ष है। हमने माँ से बहुत कुछ कहा, आईये अब हम माँ को सुनते हैं, सुनते हैं प्रकृति हमसे क्या कह रही!

ल द्दा ख

प्रस्तावना : पर्यावरण विमर्श

डॉ धनञ्जय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
सर्वोदय पी.जी.कॉलेज, घोसी, मऊ
उत्तर प्रदेश

आज विश्व पृथ्वी दिवस मनाया जा रहा है, चलो दुनिया की नजर दुनिया को आश्रय देने वाली पृथ्वी की तरफ ले चलते हैं पृथ्वी की उत्पत्ति साढ़े चार अरब वर्ष पूर्व हुई थी । शुरू में यह आग का तप्त गोला थी लेकिन, कुछ सौ वर्षो के बाद यह धीरे धीरे ठंडी होने लगी और तमाम परिवर्तनों के बाद यहां जीवन संभव हुआ। अपनी प्रकृति के कारण पृथ्वी, सौर मंडल का अनोखा ग्रह है इसे ग्रीन प्लैनेट भी कहा जाता है। अपने आरंभिक दौर से ही माता के समान सभी जैविक, अजैविक घटकों को संरक्षण प्रदान करती रही है। सभी इसमें उत्तपन्न होते हैं और इसी में विनष्ट हो जाते हैं। चाहे एक कोशकीय जीव हों या बहुकोशकीय जीव सभी को धरती से भोजन, पानी, हवा, दावा, सब कुछ मिलता है।

प्रकृति का न्याय बराबरी का है समता समानता और स्वंत्रता प्रकृति मूल है इन शब्दों की उत्पत्ति प्रकृति के साथ हुआ है। इसी सिद्धांत का पालन करते हुए पृथ्वी पर नाना प्रकार के जीव-जंतु हैं जो अपना जीवन बिता कर चले जाते हैं। बहुतेरे ऐसे हैं जो प्रकृति के अनुरूप जीवन जीते हैं। पर कुछ ऐसे भी हैं जो प्रकृति की दिशा बदलने में पूरा जीवन लगा देते हैं। ऐसे जीवों में मनुष्य अग्रणीय प्राणी है। मानव अपने विकास की पूर्णता को प्राप्त करने के बाद मनुष्य प्रकृति का दास ना होकर मनुष्य प्रकृति का भगवान बन गया। प्रकृति को दिशा देने लगा, प्रकृति को चलाने लगा, प्रकृति मनुष्य के सामने कुछ लाचार सी नजर आने लगी ।

जब चाहा तापमान कम करके ठंड उत्पन्न कर लिया, जब चाहा तापमान बढ़कर गर्मी सा माहौल बना लिया, जब चाहा नदी की धारा को मोड़ दिया, पर्वतों को तोड़ कर मैदान बना लिया। प्रकृति हर कदम पर हारती रही। मनुष्य का लालची स्वभाव ही प्रकृति के लिए सबसे बड़े खतरे का कारण है। कितना कुछ पा लेना, कितना कुछ संग्रह कर लेना, प्रकृति के लिए सबसे खतरे की बात है।

आज मनुष्य अपनी आवश्यकताओं से अधिक अपनी महत्वाकांक्षाओं के वशीभूत हो गया है। मूलभूत आवश्यकताओं से कई गुना पा लेना चाहता है, संग्रहण कर लेना चाहता है और इसके पीछे इसका लालच और लाभ कमाना ही मुख्य उद्देश्य है।

उत्तर आधुनिकता के दौर में तकनीकी और बाजारवाद ने प्रकृति एवं पर्यावरण को सबसे ज्यादा हानि पहुंचाई है । आज का तकनीकी मानव तकनीकी के आधार पर पूरे प्रकृति पर अपना नियंत्रित कर लिया है पृथ्वी के साथ-साथ वह सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र, बृहस्पति एवं शनि आदि तमाम ऐसे ग्रहों पर अपनी पहुंच बनाए रखा हुआ है। इसके साथ-साथ ब्रह्मांड में बहुत सारी ऐसी खोज कर रहा है वह कहां तक पहुंच सके क्या कुछ कर सके।तकनीकी प्रकृति के दोहन के लिए नए-नए साधन उत्पन्न कर रही है तो बाजार उसकी पहुंच आसान कर रही है और कोई भी वस्तु अपने लोकल मार्केट से निकाल करके विश्व बाजार में पहुंच जा रही है जिससे उसकी खपत आसान हो जा रही है दोहन के श्रृंखला में मनुष्य भूल जा रहा है कि प्रकृति के संसाधन सीमित है जैसे जल, कोयला, खनिज अयस्क यहां तक की ऑक्सीजन की भी एक सीमा है। विकासवाद के दौर में जंगलों की अंधा धुंध कटाई इसके लिए अभिशाप बनता जा रही है। पर्यावरण एवं विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट के अनुसार धारणीय अथवा अस्थाई विकास का सिद्धांत दिया गया है, जिसके अंतर्गत भावी पीढ़ियों के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमताओं से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाए अर्थात भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का वर्तमान समय में इस प्रकार उपयोग करना जिससे आर्थिक विकास एवं पर्यावरण सुरक्षा के बीच एक मानसिक संतुलन बना रहे। अतः मनुष्य द्वारा किए गए कार्य धारणीयता के सिद्धांत को ध्यान में रखकर किया जाए इसी क्रम में नवीकरणीय संसाधन एक ऐसा सिद्धांत है जिसमें वे संसाधन जिनके भंडारण में प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा पुनर्स्थापना होता रहता है, पर मानव द्वारा ऐसे संसाधनों का दोहन उसके पुनर्स्थापना की दर से अधिक तेजी से होने से इन संसाधनों का छय होने लगता है जैसे खनिज, वन, जल, ऑक्सीजन आदि।

आज के समय में नवीकरणीय एवं धारणीयता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए विकास को इस क्रम में किया जाए कि हम प्रकृति का दोहन तो करें लेकिन भाभी पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए जल का दोहन इस प्रकार करें कि आने वाली पीढ़ियों तक भी इसे उपलब्ध करा सके।

बचपन में देखते थे नदी, नाले, ताल तलैया, पोखरे सभी वर्ष भर जल से भरे रहते थे और ख़ास बात ये है कि इसी जल को हम पीते थे। पर आज ये सभी स्रोत वर्ष भर सूखे नजर आते हैं, वो जल राशि जो हमें प्रकृति से उपहार में मिला था उसे हमने खो दिया और उस जल राशि को हमने बोतलों में पैक कर दिया। जरा सोचिए अगली पीढी को हम क्या देंगे? इसके लिए हम सब जिम्मेदार हैं अतः इसके सुरक्षा की जिम्मेदारी भी हमारी है।

कहा जाता है जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि आज भारत के साहित्यकारों को इस कार्य में आगे आना होगा। क्योंकि साहित्य सदैव से हाशिए की वकालत करते आई है आज हमारा प्रकृति और पर्यावरण भी हाशिए की तरफ बढ़ रहा है इसे हाशिए से मुख्य धारा में लाना होगा जीवन जीने के लिए रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकता है हम अपना मकान तो बना लेते हैं लेकिन प्रकृति की अन्य जीव जंतुओं का मकान नष्ट कर देते हैं अपना मकान बनाने के लिए पशु पक्षियों जीव जंतु एवं तमाम ऐसे जीवधारी है जिनके आवास नष्ट होते जा रहे हैं हम अपने दैनिक जीवन में जाने अंजाने ऐसा कार्य हर सेकंड करते हैं जिसका विपरीत प्रभाव प्रकृति के ऊपर पड़ता है आज दुनिया के साहित्यकारों को एकजुट होकर प्रकृति संरक्षण के लिए आवाज उठानी चहिए एक आंदोलन करना चाहिए जिससे जन जन तक यह बात पहुंच जाय पर्यावरण खतरे में है तो मानव खतरे में है।

हमे अपना अस्तित्व बचाने के लिए प्राकृति का अस्तित्व बचाना होगा। जिससे हम भी सुरक्षित रहें और हमारी प्रकृति भी सुरक्षित रहे। अन्यथा एक समय आएगा जब मानव मानव से नहीं अपना अस्तित्व बचाने के लिए प्रकृति से लड़ेगा। खेत में बोया गया बीज कीटनाशक के बिना सुरक्षित नहीं है और फसल कटने से लेकर भंडार गृह में सुरक्षित रखने तक कीटनाशक का सहारा लेना पड़ रहा है। हम मंगल पर जीवन के तलाश करने के चक्कर में अपने जीवन का मंगल ही नष्ट करते जा रहे हैं।

अतः आजप्रकृति के लिए नए विमर्श की जरूरत है जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श , आदिवासी विमर्श उसी प्रकार पर्यावरण विमर्श या पृथ्वी विमर्श की जरूरत है। हर युग का साहित्य प्रकृति के सानिध्य में लिखा गया है। अब जब हर मंच से प्रकृति संरक्षण की बातें हों, हर टेक्नोलॉजी के पीछे प्रकृति संरक्षण हो। हमारे शास्त्रों में वर्णित "वसुधैव कुटुंबकम्", "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे आदर्श वाक्य प्राचीन काल में प्रकृति संरक्षण की व्यापकता को प्रदर्शित करते हैं है साहित्य में भावों के साथ साथ प्रकृति अपना रंग बदलती रही है। महा कवि सूर दास जी ने प्रकृति के विषय में लिखा है "तब ये लता लगनि अति शीतल अब भइ विषम ज्वाल कै पुंजै"के जितने भी जीव जंतु हो यह हमारे जीवन के अंग है यह जीव जंतु सुरक्षित रहेंगे तभी मानव जीवन सुरक्षित रहेगा अन्यथा फिर एक समय आएगा जब पानी की बोतलों के साथ-साथ ऑक्सीजन का सिलेंडर भी लेकर चलना पड़ेगा । आज विश्व एक गांव बन गया है करलो दुनिया मुट्ठी में के नारे दिए जा रहे हैं दुनियां मुट्ठी में हो गई तो हम कहां रहेगें।

कार्टूनिस्ट : कृतिका सिंह

विश्व पर्यावरण दिवस और हमारी भूमि

कैप्टन(डॉ०) जय महलवाल
(अनजान)
राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

जैसा कि हम सबको विदित कि हर वर्ष 5 जून को हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। समूचे विश्व में पर्यावरण के संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने के लिए हर वर्ष हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं।

शुरुआत–गौरतलब है कि विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय 1972–1973 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हुए सम्मेलन में लिया गया था। जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता और पर्यावरण से संबंधित चिताओं से अवगत करवाना था। अभी तक हम में से बहुत कम लोगों को यह भी जानकारी पूर्ण रूप से नहीं है कि विश्व पर्यावरण दिवस का दूसरा नाम वन महोत्सव भी है। इस धरती पर अधिक से अधिक पेड़ पौधे और वनों का विकास करना भी इसका एक आंतरिक उद्देश्य समझा जा सकता है, जिससे कि हमारा पर्यावरण प्रदूषण न होकर साफ एवं स्वच्छ रहे। सबसे पहले सन 1973 में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसका थीम ओनली वन अर्थ था।

जनक–विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डार्विन, हम्बोल्टसे बहुत ही अत्यधिक प्रभावित थे। अगर आज के परिदृश्य की बात की जाए तो आज भी हम पूरे विश्व में बहुत सारी पर्यावरण संबंधी चुनौतियों से जूझ रहे हैं, कहीं ना कहीं यह परिस्थितियों हमारे अस्तित्व के लिए भी खतरा बन रही हैं। हम्बोल्ट के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक जुनून की वजह से उन्हें इसका जनक माना जाता है।

थीम –पर्यावरण दिवस के मुख्य छः थीम है (१) परिवार एवम मित्र (२) भोजन (३) पानी (४)आवास (५) यात्रा (६) हम चीज़ें कैसे बनाते हैं।

वहीं दूसरी तरफ इस वर्ष का थीम 'भूमि पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखा लचीलापन' है। इसके आयोजन का नारा " हमारी भूमि और हमारा भविष्य " है।

उद्देश्य– पूरे विश्व में पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों के निवारण करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा संचालित यह दिवस वर्ष का सबसे बड़ा आयोजन होता है। हमें अपनी प्रकृति की रक्षा की जागरूकता और आए दिन पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों का सामना करना है।

चुनौती–आज जहां एक और हम दिन प्रतिदिन हर एक दृष्टिकोण से विकसित होते जा रहे हैं वहीं पूरे विश्व में पर्यावरण संबंधी चुनौती एक गंभीर समस्या का रूप ले रही है। दिन प्रतिदिन आवासीय कॉलोनी बनाने के लिए जहां एक तरफ जंगलों का अंधाधुंध कटान किया जा रहा है । वहीं औद्योगिकरण में भी जंगलों का कटान किया जा रहा है। मानव अपनी सुविधा के लिए सड़कों का निर्माण कर रहा है जिससे कि हमारी भूमि की पकड़ भी कम होती जा रही है। धीरे-धीरे हम विकास की ओर तो बढ़ रहे हैं लेकिन अपने पर्यावरण संबंधित चिंताओं को नजर अंदाज कर रहे हैं। इसके अलावा भी पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली और भी चुनौतियां हमारे सामने हैं जिनमें से फैक्ट्री से निकलने वाला धुआं एवं वाहनों से उत्पन्न प्रदूषण भी मानवीय जीवन को संकट में डाल सकता है। अतः समय रहते हुए हमें अपने पर्यावरण को साफ एवं स्वच्छ रखने के उपाय ढूंढने होंगे। गर्मियों के दिनों में लोग जानबूझकर अपनी थोड़ी सी सहूलियत के लिए पूरे के पूरे जंगलों को आग के हवाले कर देते हैं, जिससे कि हमारे पर्यावरण को बहुत अत्यधिक नुकसान होता है कई दिनों एवं महीनो तक लगने वाली जंगलों की आग बहुत से जंगली जानवरों पशु पक्षियों के जीवन को लील लेती है।

क्या करना चाहिए–विश्व में सभी देशों की सरकारों को यह आदेश पारित करना आज के समय में एक आवश्यकता हो गई है कि जिस भी व्यक्ति, बच्चे, बूढ़े, जवान का जन्मदिन हो उस दिन वह एक पेड़ अवश्य लगाये और उसकी जीवन पर्यंत रक्षा करें। हम अपनी धरती को जितना हरा भरा बनाएंगे हमारा पर्यावरण भी उतना ही साफ एवं स्वच्छ रहेगा। स्कूल विद्यालय एवं महाविद्यालयों तथा सरकारी एवं गैर सरकारी सभी संस्थाओं में पर्यावरण संबंधित जागरूकता फैलाने के लिए अधिक से अधिक कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए।

वहीं है हमारी खुशहाली,
जहां जहां है पेड़ पौधों की हरियाली,
अगर काट काट कर करेंगे इनको कम,
आग लगाएंगे जानबूझकर और पेड़
लगाएंगे कम,
इस तरह से करेंगे अगर इनको हम नष्ट,
फिर कहां मिलेगी हरियाली,
और उठाना पड़ेगा ऑक्सीजन ढूंढने का
कष्ट।

आओ प्रण लें – विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर हम सबको प्रणाम लेना चाहिए कि जिस पृथ्वी को हमने खतरे में डाल दिया है, उसको हम सब ने मिलकर बचाना है। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर हमें अपने पर्यावरण को साफ एवं स्वच्छ बनाना है। इस तरह से हम अपने पूरे विश्व की तस्वीर को बदल देंगे और अपने पर्यावरण को स्वच्छ एवम सुंदर बनाकर पूरे विश्व में एक संदेश देंगे।

हमारी पृथ्वी

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात

पृथ्वी इकलौता ऐसा ग्रह है, जहाँ जीवन सम्भव है। जहाँ का वातावरण अनुकूल और प्रकृति सुगम और मनोरम है। मेरा मानना है कि प्रकृति से बड़ा कोई कलाकार नहीं होता हैं। प्रकृति जैसी चित्रकारी कोई नही कर सकता है। हरियाली, नदी, झरने, नहर का कलकलाता स्वर और पंक्षियों का कलवर करना क्या खूब मन को भाता है। बारिश में मानो जैसे बुँदे धरती से मिलाप करना चाहती है। दोनों की जो जुगलबंदी है वही एक भीनी-भीनी सी खुशबू जीवित करती है। ये सब वैसा ही सुकून देती हैं जो हमे ईश्वर या माँ के पास मिलता हैं। प्रकृति में हर जीव का जहाँ एक तरफ अपना महत्व है वहीं दूसरी तरफ प्रकृति में उपलब्ध पानी, मिट्टी, हवा सीमित रूप से ही जीवन को पाल सकती है। जिस तरह से प्रकृति सबको स्वतंत्र रूप से सब कुछ देती है वो ही अपेक्षा उसकी हम सबसे है, लेकिन प्रकृति के इस संदेश को समझने में हम चूक गए! अन्य जीव-जन्तु निश्चित रूप से अपने हिस्से का योगदान इन्हें पनपाने और बनाने के लिए करते हैं सिवाय मनुष्य के। पक्षी हो या जीव, पेड़ हों या पौधे सब प्रकृति को बनाए रखने में योगदान करते हैं। सिर्फ मनुष्य ही है जिसने पारिस्थितिकी तंत्र को छिन्न-भिन्न कर दिया, इसलिए मनुष्य ही इस दंड का सबसे बड़ा भागीदार बना। हमने प्रकृति व प्रभु में अंतर कर दिया जबकि वो एक ही थे। जैसे प्रभु सबको देते हैं वो ही व्यवहार प्रकृति का है पर इन दोनों से ही हम यह नही समझ सके कि इनके इस व्यवहार को हमें अपनाना है, ताकि हम इसके लिए सबके साथ मिलकर जीवन-यापन करें। किन्तु मनुष्य है कि जो किसी भी अच्छी, स्वच्छ, निर्मल वस्तु को अच्छा नहीं रहने देता, उसपे परीक्षण करके कुछ नया कृत्य करने की चेष्टा करता है। वह पर्यावरण को अपने जरूरत के अनुसार बदलने का कार्य करता है, जो कि प्रकृति को बर्दाश्त नहीं है जिसका परिणाम पूरा विश्व भोगता है और ये परिणाम - दुनिया भर में वनों की कटाई,

बढ़ता ग्लोबल वार्मिंग, अपव्यय और भोजन, प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, चक्रवात, महामारी, भूकंप, ओजोन परत में छिद्र इत्यादि जैसे पर्यावरणीय समस्याओं के रूप में देखे जा सकते है।

धरती एक ही है और हम सब की है, लेकिन हमारे ही क्रियाकलापों से अब धरती जल रही है। इसीलिए इसके संरक्षण का दायित्व हम सब का है। हमें ये समझना होगा कि जिस प्रकार पृथ्वी में प्रदूषण, महामारियाँ फैल रहीं हैं तथा ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन हो रहा है, यह कहना सही होगा कि पृथ्वी को अगर आज हम सब मिलकर बचाने की कोशिश नहीं करेंगें तो एक दिन इस पृथ्वी में हमारे लिए रहना बहुत मुश्किल होगा।

पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिकों ने माना है कि पेड़ लगाना पर्यावरण की देखभाल के सबसे आसान और सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। ये वो पेड़ हैं जो छाया के साथ-साथ गाड़ियों से निकल रहे प्रदुषण को सोख सकते हैं। इन पेड़ों में खासतौर से बरगद, पीपल व गूलर आते हैं जो परम्परागत रूप में भी प्रयोग होते रहे हैं। ये पहल प्रकृति को समझते हुए नए विज्ञान और ज्ञान से जुड़ने की है। यह योजना नजदीक भविष्य में पर्यावरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होगी और सड़क निर्माण के साथ ही इस तरह के वृक्षारोपण नए विकास के साथ प्राणों की भी रक्षा कर सकेंगे। इसमें बड़ी बात यह भी है कि पुराणों में इन्हीं वृक्षों का पर्यावरण पर योगदान भी दर्शाया गया है। पारिस्थितिक तंत्र को अनुकूलित और पुनर्स्थापित करने के लिए शहरी और ग्रामीण परिदृश्य में अलग-अलग तरीके हैं। लोगों को पर्यावरण पर दबाव को भी खत्म करने की जरूरत है।

प्रकृति के संदर्भ में देखे तो कोरोना महामारी मानव जाति के लिए तो त्रास किंतु प्रकृति के लिए कहीं-न-कहीं लाभकर ही सिद्ध हुई थी। क्योंकि इसके चलते मानवीय क्रियाएं ठप्प पड़ गई थी, जिसका प्रत्यक्ष लाभ प्रकृति को मिला। वातावरण स्वच्छ और निर्मल हो गया। पानी, नदियाँ, हवा, जंगल, भूमि एवं पूरा पर्यावरण खिलखिला उठा। हवा शुद्ध होने से आसमान भी साफ हो गया। पक्षियों का कलरव दुबारा गूंजने लगा। सड़कें काफी हद तक प्रदूषण रहित हो गई, क्योकि वाहनों से निकलनेवाले धुएं और उनके हॉर्न में कमी आयी।

इसी प्रकार हमें विश्वास है कि यदि हम सब प्रयास करें, प्रकृति के प्रति सद्भावना रखें तो इस क्षतिग्रस्त पर्यावरण के अंधकार को हम स्वच्छ और हरे-भरे वातारण से मिटा देंगे। आज जब हम घरों में बैठे हैं तो हमारे पास सलीके से सोच-विचार, चिंतन करने का पर्याप्त समय है। हमारे पास भावी पर्यावरण व पारिस्थितिकी तंत्रीय खतरों से निपटने के लिए, आज यह उपयुक्त समय है जब हमें प्रकृति के लिए कुछ करने की जरूरत है, नही तो हमें इसके खतरनाक परिणाम जरूर देखने को मिलेंगे।

पर्यावरण संरक्षण: महिलाओं का योगदान

महिलाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्राचीन काल से जागरूक रही हैं

डॉ. नन्दकिशोर साह
District Mission Manager
(SM&CB),UPSRLM
Etawah, , UP

पर्यावरण शब्द का चलन नया है, पर इसमें जुड़ी चिंता नई नहीं है। वह भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। आज पर्यावरण बचाने के नाम पर बाघ, शेर, हाथी आदि जानवरों, नदियों, पक्षियों, वनों आदि सबको बचाने के लिए विश्वव्यापी स्वर उठ रहें है। भारत में प्राचीन काल से पर्यावरण की तत्वों को धार्मिक कलेवर में समेत कर उनके संरक्षण एवं संवर्धन को एक सुनिश्चित आधार प्रदान किया गया है। महाभारत में कहा गया है कि वृक्ष रोपने वाला उनके प्रति पुत्रवत आत्मीयता रखता है। एक वृक्ष अनेक पुत्रों के बराबर होता है। महाभारत में पीपल की पत्तियों तक को तोड़ना मना है। भारतीय मानवीय मूल्यों में वृक्षों को व्यर्थ काटना माना है। मनु स्मृति निर्देश देती है कि गांव की सीमा पर तालाब या कुएं बावड़ी कुछ न कुछ अवश्य बनाना चाहिए। साथ ही वट, पीपल, नीम या शाल एवं दूध वाले वृक्षों को भी लगाना चाहिए। किसी ग्राम में फूल व फलों से युक्त यदि एक भी वृक्ष दिखाई दे तो वह पूज्यनीय होता है। प्राचीन मूर्तियों में अशोक वृक्ष की पूजा क्रिया अंकित मिलती है। अर्थ वेद के अनुसार जहां पीपल और बरगद के पेड़ होते हैं। वहां प्रबुद्ध लोग रहते हैं। वहां क्रीमी नहीं आते। कृष्ण पवित्र अक्षय वट वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान मग्न हुए थे। इसकी छाया जहां जहां तक पहुंचती है तथा इसके संघर्ष से प्रवाहित जल जहां तक पहुंचता है, वह क्षेत्र गंगा के समान पवित्र होता है। पीपल मानव जीवन से जुड़ा वृक्ष है। लंबे जीवन का प्रतीक है, क्योंकि यह दीर्घायु होता है। बिहार, उत्तर प्रदेश और अन्य हिंदीभाषी राज्यों में उपनयन संस्कार के समय इसकी भी पूजा होती है।

सामाजिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों को देखें तो यह पता चलता है कि प्राचीन काल से ही महिलाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रही हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज भी महिलाओं द्वारा पर्व-त्योहार के अवसर पर पूजा अर्चना में अनेक वृक्षों यथा- पीपल, तुलसी, अमला, बेर, नीम आदि वृक्षों एवं विभिन्न पशु तथा गाय, बैल, चूहा, घोड़ा, शेर, बंदर, उल्लू आदि को सम्मिलित करना एवं उनकी पूजा-अर्चना के माध्यम से संरक्षण प्रदान करना देखने को मिल जाता है। सुहागिनी वट अमावस्या व्रत की पूजा के बाद वटवृक्ष की पुजा करती हैं। आदिवासियों में विवाह के समय महुआ के पेड़ पर सिंदूर लगाकर वधू अटल सुहाग का वरदान लेती है और आम के पेड़ को प्रणाम कर सफल वैवाहिक जीवन की कामना करती हैं। इस प्रकार, महिलाऐं विभिन्न रूपों में पर्यावरण की संरक्षण करती आ रही हैं। जंगलों के विनाश के विरुद्ध सफल आंदोलन के रूप में पूरी दुनिया में चिपको आंदोलन सराह जा चुका है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस आंदोलन का संचालन करने वाली महिलाएं पहाड़ी व ग्रामीण क्षेत्रों की रहने वाली निरीक्षर एवं अनपढ़ महिलाएं थी। आज पढ़े-लिखे लोग भी पूर्वजों के लगाए पेड़ पौधों को काटने से नहीं हिचकिचाते हैं। यह गंभीर पर्यावरणीय मुद्दा है। जिंदगी भर मनुष्य लकड़ी से बने समानों का उपयोग करता है, किंतु पेड़ नहीं लगता है। यह चिंतनीय है। पेड़ लगाएंगे तो फल मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा।

ग्लोबल वार्मिंग और इसके प्रभाव

प्रो. सरस्वती पी सती
सुप्रसिद्ध भू-पर्यावरणविद्
प्रोफेसर, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली उत्तराखंड औद्यानिकी और वानिकी विश्वविद्यालय, उत्तराखंड

प्रसिद्ध भू-पर्यावरणविद् डॉ एस पी सती जी हिमालय के पर्यावरणीय मुद्दों पर एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आवाज हैं..आपके पास 30 वर्षों से अधिक का शोध और शिक्षण अनुभव है, आपके अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र विभिन्न पृथ्वी की सतह प्रक्रियाएं और हिमालयी क्षेत्रों में उनके परिणाम, विकासात्मक परियोजनाएं और उनके परिणाम, भूकंपीय प्रक्रियाएं आदि हैं। डॉ. सती के 70 से अधिक शोध पत्र अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय ख्याति के विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। डॉ. सती ने 3 पुस्तकों का भी संपादन किया है.. आपने विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में 500 से अधिक लोकप्रिय लेख प्रकाशित किए हैं.. डॉ. सती विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार चैनलों में लिखते रहे हैं, अपनी शैक्षणिक व अकादमिक कार्यों के अलावा, डॉ.सती ने 1994 से 2000 तक उत्तराखंड के अलग राज्य आंदोलन का नेतृत्व किया। आंदोलन के दौरान उन्हें 24 दिनों की कुल अवधि के साथ तीन बार जेल जाना पड़ा। इन व्यस्तताओं के बीच भी आप अपनी बेहद उत्कृष्ट साहित्यिक रचना यात्रा भी निरंतर जारी रखे हुए हैं ।

ग्लोबल वार्मिंग या भूमंडलीय उष्णन एक यथार्थ है, रियलिटी है। दो-तीन दशक पहले अधिकांश लोग, यहां तक कि बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी यह मानते थे की ग्लोबल वार्मिंग जैसी कोई चीज है नहीं, और यह एक बौद्धिक जुगाली का साधन है। परंतु अब यह बात साफ-साफ परिलक्षित हो चुकी है कि विश्व का तापमान लगातार बढ़ रहा है । 'आईपीसीसी' संस्था जो विश्व की जलवायु परिवर्तन पर विश्व भर में हो रहे शोधों का विश्लेषण कर बड़े निष्कर्ष प्रकाशित करती है, के अनुसार सन 2023 का वर्ष पिछले लगभग एक लाख साल में सबसे गर्म वर्ष रहा।यहां तक कि जून 2023से पिछले मार्च 2024तक लगातार 8 महीने में तापमान रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ना जारी रहा। विश्व का औसत तापमान इस दौरान सामान्य से सामान्य से 0.2 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक था जो की बहुत ही असामान्य था ।

>>> ग्लोबल वार्मिंग क्या है?

आइए इस तथ्य को एक उदाहरण से समझते हैं। किसी ठंडे स्थान पर एक कार जाड़ों में धूप में खड़ी हो। हम इस गाड़ी के अंदर बैठें तो बाहर की अपेक्षा गाड़ी के अंदर हमें अधिक महसूस होता है। ऐसा क्यों? धूप तो बाहर भी पड़ रही है और अंदर भी। तो फिरगाड़ी के अंदर अधिक गर्मी महसूस क्यों होती है? इसका कारण यह है की सूरज से आने वाली लघु तरंगदैर्घ्य का विकिरण यानि कि (short wave radiation) के रूप में ऊष्मा कांच से गाड़ी के अंदर प्रवेश कर जाती है और गाड़ी के अंदर के माहौल को गरम कर देती है। इस दौरान यह विकिरण गर्मी के रूप में दीर्घ तरंगदैर्घ्य याने कि (long wave radiation) में परिवर्तित हो जाती है। ये परिवर्तित दीर्घ तरंगदैर्घ्य विकिरण गाड़ी के कांच से वापस बाहर नहीं आ सकता और अंदर ही फंस जाता है । इस तरह लगातार धूप में खड़ी रहने से काँचों के रास्ते गाड़ी के अंदर प्रवेश कर रही ऊष्मा अंदर ही फंस कर रह जाती है और गाड़ी को गरम करती रहती हैं ।ठीक इसी तरह सूर्य से आने वाला लघु तरंगदैर्घ्य वाला विकिरण धरती पर टकराकर दीर्घ तरंगदैर्घ्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है । कायदे से इस विकिरण को उतनी ही मात्रा में अंतरिक्ष को परावर्तित हो जाना चाहिए।जिससे पृथ्वी का औसत तापमान लगातार एक जैसा बना रहता। अगर पृथ्वी के वायुमंडल में दीर्घ काल से गैसों का बना संतुलन पहले जैसा बना रहता तो ऐसा होता भी रहा है। हम जानते हैं कि पृथ्वी पर समस्त क्रियाकलापों का कर्ता-धर्ता सूर्य है । सूर्य से ही आने वाली ऊष्मा अथवा ऊर्जा के कारण वायुमंडल की गतिविधियां चलती हैं, जैव मंडल का अस्तित्व है, समुद्र है, तो वर्षा है; यानी की पृथ्वी की सतह और सतह के ऊपर वायुमंडल में होने वाली समस्त जैविक अजैविक गतिविधियों का कर्ता सूर्य है। यह सभी गतिविधियां सूर्य की प्रकाश के कारण ही संभव हैं। लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है की इन समस्त क्रियाकलापों में सूर्य की प्राप्त ऊर्जा का एक से दूसरे रूप में परिवर्तित होना-क्रियाकलाप निपटाना और फिर उस ऊर्जा का उतनी ही मात्रा में वापस अंतरिक्ष चले जाना अनिवार्य होता है। लेकिन पिछले डेढ़ सौ वर्षों से पृथ्वी वायुमंडल में कुछ गैसों की मात्रा लगाता बढ़ने लगी है। ये गैसें जिनमें कि कार्बन डाइऑक्साइड याने कि co2 सबसे प्रमुख है, कार के कांच की तरह व्यवहार करती हैं। co2 का वायुमंडल में सामान्य स्तर 0.03% होता है। अगर उसकी मात्रा में वृद्धि होती है co2 की परत दीर्घ तरंगदैर्घ्य वाले विकिरण को वायुमंडल से बाहर अंतरिक्ष में नहीं जाने देती । इस तरह से सूर्य से लगातार या रही ऊष्मा का अधिकांश भाग पृथ्वी के वातावरण में ही फंस कर रह जाती है। इस तरह पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ने लगा है। कार्बन डाइऑक्साइड की अधिक उत्सर्जन से इसका स्तर वायुमंडल में बढ़ रहा है। यही ग्लोबल वार्मिंग है ।

>>> क्यों बढ़ता है विश्व का तापमान बढ़ाने वाली गैसों का स्तर??

सवाल यह उठता है कि क्या कारण है ऐसी गैसों का स्तर बढ़ाने का जिनकी वजह से विश्व का तापमान बढ़ रहा है?

जैसे की पहले ही बताया जा चुका है इन गैसों में सबसे बड़ा योगदान कार्बन डाइऑक्साइड, का है, उसके बाद क्लोरो फ्लोरो कार्बन और मीथेन का प्रमुख योगदान है, पर लगभग दो तिहाई योगदान तो कार्बन डाइऑक्साइड का हो है।

प्रश्न यह उठता है कि कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन अब अधिक मात्रा में क्यों होने लगा? सांस तो सभी जीव जंतु पहले भी लेते थे जिसमें कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता ही था। लकड़ियाँ भी पहले से ही जलाई जाती थी ईंधन के लिए। जंगल भी जलते थे। असल में जितनी भी कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित होती थी, वो पेड़ पौधों द्वारा भोजन बनाने में उपयोग में लाई जाती थी और पौधे भोजन बनाने की प्रक्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग करते हैं और इस गतिविधि में आक्सीजन गैस छोड़ते हैं। इस तरह अधिक मात्रा में उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइडपौधों द्वारा उपयोग में लाई जाती थी लिहाजा इसकी मात्रा वायुमंडल में स्थिर बनी रहती थी।

इस साम्य में परिवर्तन आया औद्योगिक क्रांति के बाद। उद्योगों के लिए ऊर्जा की जरूरत को पूरा करनेके लिए जीवाश्म ईंधन याने कि कोयला और पेट्रोलियम का जारण किया जाने लगा। साथ ही जंगलों का अंधाधुंध काटान किया जाने लगा। यानी कि अब कार्बन डाइऑक्साइड अधिक मात्रा में उत्सर्जित हो रहा है। इससे वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ने लागि जोकि लगातार जारी है। । यही कारण है किवर्तमान ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण औद्योगिक क्रांति को माना ही जाता है। कार्बन डाइऑक्साइड के अतिरिक्त मेथैन और क्लोरो फ़्लोरो कार्बन गैसें भी ग्लोबल वार्मिंग की जिम्मेदार हैं। परंतु अपेक्षाकृत इनका योगदान कम है और ये भी मुख्यतः औद्योगिक क्रांति के ही उत्पाद हैं।

>>>ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग के भयानक दुष्प्रभाव सामने आ रहे हैं। ध्रुवों में विद्यमान बर्फ अधिक मात्रा में पिघल रही है तो हिमालय जिसे अधिक बर्फ की मौजूदगी के कारण तीसरा ध्रुव भी कहा जाता है, में विद्यमान बर्फ बहुत तेजी से पिघल रही है, इस अतिरिक्त पिघलती बर्फ के कारण समुद्र का जलस्तर घातक स्तर तक बढ़ रहा है । वैज्ञानिकों का अनुमान है की ऐसी दशा में महासागरों के बीच कई द्वीपों का अस्तित्व मिट जाएगा और कई तटीय शहर जिनमें कि हमारे चेन्नई और मुंबई जैसे कई शहर हैं, का अस्तित्व भी संकट में आ रहा है। हिमालय की अधिकांश नदियों का अस्तित्व निकट भविष्य में मीट सकता है। ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव केवल यही तक सीमित नहीं है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इसके कारण मौसमों में उथल-पुथल देखी जा रही है। पूरे विश्व स्तर पर क्षेत्रीय सामयिक विस्तार में बर्फ और बारिशों में असामान्य परिवर्तन दृष्टिगत होंगे। मसलन गर्मियों के महीने में जून के तृतीय सप्ताह जुलाई अगस्त और सितंबर के प्रथम सप्ताह तक में उत्तर भारत में जो मानसूनी बारिश होती है उनका मिजाज बदलते हुए दिख रहा है। अब या तो सितंबर आखरी सप्ताह और अक्टूबर के तृतीय सप्ताह तक भी मानसून की बारिश जारी रह रही है और या फिर जून के प्रथम सप्ताह और मई से ही मॉनसून की बारिशें होती देखि जा रही हैं। । इसके अतिरिक्त जहां बारिश नहीं होती थी मसलन पश्चिम क्षेत्र में गुजरात और राजस्थान के मरुस्थलों में जहां मॉनसून की बारिश कम होती थी या फिर लेह लद्दाख और उच्च हिमालय क्षेत्र में जहां मॉनसून की बारिश न के बराबर होती थी, वहां भी भयानक अतिवृष्ट की घटनाएं घटित हो रही हैं। सन 2010 में लेह की अति वृष्टि हो या फिर 2013 की केदारनाथ क्षेत्र की अतिवृष्टि 2021 और 2022 में उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में अक्टूबर के तृतीय सप्ताह में होने वाली अतिवृष्टि जनित आपदा की घटनाएं इस तरह के कुछ उदाहरण भर हैं।

उत्तर भारत में वर्षा मुख्यतः दो सिस्टमों के कारण होती है एक जो गर्मियों दक्षिण पश्चिम मानसून की सक्रियता के कारण और जाड़ों में पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के कारण। कुल मिलाकर दो मॉइश्चर सिस्टम काम करते हैं। परंपरागत रूप से पश्चिमी विक्षोभ की अधिकांश बारिशें जाड़ों में ही होती थी और गर्मियों में मानसून के कारण। गर्मियों में पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता नगण्य होती थी। लेकिन ग्लोबल वार्मिंग से जनित दुष्प्रभावों के कारण पिछले 20 सालों में गर्मियों में पश्चिमी विक्षोभ की तादाद बढ़कर दुगनी हो गई। यह देखा जा रहा है कि मौसम जनित बड़ी आपदा का खासकर हिमालय में मुख्य कारण पश्चिमी विक्षोभ और दक्षिण पश्चिम मानसून का एक साथ सक्रिय होना है।चाहे वह 2013 की केदारनाथ आपदा हो 2022 और 2023 की कुमाऊं क्षेत्र की आपदा हो या फिर 2024 की हिमाचल की अतिवृष्टि जनित आपदा हो, इन सभी आपदाओं में मानसून के साथ-साथ पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता का योगदान रहा है ।

वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया है की ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य प्रभाव तटीय क्षेत्र और हिमालय जैसे उच्च पर्वत श्रृंखलाओं में अन्य क्षेत्रों से अधिक परिलक्षित होता है।हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग की रफ्तार विश्व के किसी भी अन्य क्षेत्र से दुगनी पाई गई है। मसलन सन 2022 में प्रतिष्ठित शोध पत्रिका साइंस में प्रकाशित एक शोध पत्र के अनुसार वैश्विक तापमान वृद्धि जहां 0.16 डिग्री प्रति दशक है वहीं हिमालय में यह वृद्धि दर 0.32 डिग्री है याने कि दुगुनी। यह भी पाया गया है कि साल में जहां अब काम दिनों में बारिश होती है वहीं अतिवृष्टि की घटनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके कारण सम्पूर्ण हिमालय में आपदाओं कि संख्या में काफी वृद्धि हुई है।

नेचर जिओसाइंस नामक प्रतिष्ठित शोध पत्रिका में प्रकाशित एक शोध के अनुसार, बारिशों के मिजाजमें इस परिवर्तन के कारण और ग्लेसियारों के तेजी से पिघलने के कारण सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र के बांधों की सुरक्षा को भयानक खतरा उत्पन्न हो गया है। जिसके कारण निचले क्षेत्रों की बस्तियों पर भी संकट उत्पन्न हो गया है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में हीट वेव्स की घटनाओं में आसातीत वृद्धि हुई है। सन 2022 में पाकिस्तान में आई भयानक बाढ़ का कारण हीट वेव्स को ही माना जा रहा है। हीट वेव्स के कारण हिमालायी क्षेत्रों में बर्फ तेजी से पिघली जिससे पाकिस्तान को जाने वाली सिंधु नदी में अभूतपूर्व बाढ़ आई।

भारत में ग्लोबल वार्मिंग का असर की अन्य रूपों में देखने को मिल रहा है। खेती की उत्पादकता काम हो रही है, नई नई बीमारियाँ पैर पसार रही हैं। बाढ़ों और चक्रवातों की संख्या और विराटता बढ़ रहे हैं जिससे प्रतिवर्ष बड़े पैमाने पर जन धन हानी हो रही है।

ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करने के वैश्विक स्तर पर अभी तक किए जा रहे प्रयास लगभग बेअसर साबित हो रहे हैं। विश्व के देशों में इसके लिए उठाए जाने वाले संभावित कदमों को लेकर गहरे मतभेद हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि मानवता के अस्तित्व के संकट को देखते हुए सभी देश मिल कर जल्दी ही कुछ ठोस कदम उठायेंगे।

जहां तक हमारे देश का सवाल है तो राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर इस मामले को लेकर बहुत कारगर कदम तो अभी तक नहीं उठाए गए हैं। हालांकि पर्यावरण एव वन मंत्रालय का नाम बदल कर इसे पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय कर दिया गया है। परंतुवाहनों की संख्या में अनियंत्रित वृद्धि, हिमालायी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर छेड़-छाड़, अंधाधुंध सड़कों का निर्माण, ऊर्जा के रूप में फासल फ्यूल का विकल्प तलाशने पर गंभीरता से काम न करना सरकारों की नियत पर सवाल खड़े कर्ता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि मुद्दे कि संवेदनशीलता को देखते हुए सरकारें जल्दी ही ठोस कदम उठायेंगी।

जलसंवर्धन की दिशा में कदम: गढ़वाल हिमालय की स्थिति

गढ़वाल हिमालय भारत के उत्तरी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण और सुंदर क्षेत्र है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, जीव-जंतुओं की विविधता और संसाधनों के लिए प्रसिद्ध है। हाल के वर्षों में, जलवायु परिवर्तन, मानवीय गतिविधियों और अन्य कारणों से इस क्षेत्र में जलसंकट गहरा हो गया है। इस संकट से निपटने के लिए जलसंवर्धन के विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं, जो न केवल स्थानीय समुदायों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए महत्वपूर्ण हैं।

नरेश सिंह
शोधार्थी, वानिकी
(वृक्ष सुधार विभाग)
वानिकी महाविद्यालय, रानीचौरी,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

जलस्रोतों की स्थिति

गढ़वाल हिमालय में जलस्रोतों का प्रमुख आधार ग्लेशियर, नदियाँ, झीलें और झरने हैं। गंगा, यमुना, भागीरथी, और अलकनंदा जैसी प्रमुख नदियाँ इस क्षेत्र से निकलती हैं। लेकिन पिछले कुछ दशकों में, ग्लेशियरों के पिघलने की गति बढ़ी है, जिससे जलस्रोतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कई झरने और छोटी नदियाँ सूखने की कगार पर हैं, जिससे स्थानीय जलापूर्ति में कमी आई है।

जलसंवर्धन के प्रयास

गढ़वाल हिमालय में जलसंवर्धन के लिए कई स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कदम निम्नलिखित हैं:

1. वृक्षारोपणऔर वनसंरक्षण: वनों का संरक्षण और वृक्षारोपण जलसंवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ मिट्टी में नमी बनाए रखने में मदद करते हैं और जलस्रोतों को पुनःभरने में सहायक होते हैं। स्थानीय सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा वृक्षारोपण अभियान चलाए जा रहे हैं।
2. ग्लेशियरसंरक्षण: ग्लेशियर संरक्षण के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। ग्लेशियरों की निगरानी और उनके पिघलने की गति को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।
3. वाटरशेडप्रबंधन: वाटरशेड प्रबंधन के तहत जल संग्रहण और संरक्षण की विभिन्न तकनीकें अपनाई जा रही हैं। छोटे-छोटे बांध, तालाब, और कुंड बनाए जा रहे हैं ताकि बारिश के पानी को संरक्षित किया जा सके।

4. जलसंचयन: जल संचयन तकनीकों को बढ़ावा दिया जा रहा है। घरों, स्कूलों, और कार्यालयों में वर्षा जल संग्रहण की प्रणाली लगाई जा रही है, जिससे भूजल स्तर को बढ़ाया जा सके।
5. जनजागरूकता: जलसंवर्धन के महत्व को समझाने के लिए स्थानीय समुदायों में जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। स्कूलों, कॉलेजों और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यशालाएँ और संगोष्ठियाँ आयोजित की जा रही हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

जलसंवर्धन के प्रयासों में कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। जलवायु परिवर्तन, मानवीय अतिक्रमण, और अपर्याप्त संसाधन बड़ी बाधाएँ हैं। लेकिन सरकार, गैर-सरकारी संगठन, और स्थानीय समुदाय मिलकर इन चुनौतियों का समाधान खोज रहे हैं। आधुनिक तकनीकों का उपयोग, पारंपरिक ज्ञान का समन्वय, और सामूहिक प्रयास जलसंवर्धन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

निष्कर्ष

गढ़वाल हिमालय में जलसंवर्धन एक जटिल लेकिन आवश्यक कार्य है। जलस्रोतों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए उठाए गए कदम न केवल इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी को बनाए रखने में सहायक होंगे बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण साबित होंगे। जलसंवर्धन के प्रयासों में सभी की भागीदारी आवश्यक है ताकि हम एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ सकें।

उत्तराखंड में वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन

एक गंभीर चुनौती

उत्तराखंड, जिसे देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है, अपने सुंदर वनों, पहाड़ियों और विविध वन्यजीवों के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य न केवल अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है, बल्कि इसकी जैव विविधता भी यहाँ की पहचान है। परंतु, हाल के वर्षों में उत्तराखंड वनाग्नि (जंगल की आग) और जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।

प्रियंका ठाकुर
छात्रा, वानिकी स्नातकोत्तर
(वन जीव विज्ञान एवं वृक्ष सुधार विभाग)
वानिकी महाविद्यालय, रानीचौरी, टिहरीगढ़वाल , उत्तराखंड

वनाग्नि की समस्या

उत्तराखंड में हर साल गर्मियों के मौसम में जंगल की आग की घटनाएं बढ़ जाती हैं। वनाग्नि न केवल वन्यजीवों के जीवन को प्रभावित करती है, बल्कि स्थानीय निवासियों और पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डालती है। वनाग्नि के कारण वनों का विनाश होता है, जिससे वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियां संकट में पड़ जाती हैं। इसके अलावा, जंगल की आग से उत्पन्न धुआं और कार्बन डाइऑक्साइड वायु प्रदूषण को बढ़ाते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन ने वनाग्नि की घटनाओं को और भी गंभीर बना दिया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान में वृद्धि और वर्षा के पैटर्न में बदलाव हो रहा है। उत्तराखंड में गर्मियों का मौसम अब और अधिक शुष्क और गर्म होता जा रहा है, जिससे जंगल की आग लगने की संभावना बढ़ जाती है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालयी ग्लेशियर भी पिघल रहे हैं, जिससे जल संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है।

वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंध

वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन के बीच एक परस्पर संबंध है। वनाग्नि से उत्पन्न होने वाली ग्रीनहाउस गैसें जलवायु परिवर्तन को और बढ़ावा देती हैं। वहीं दूसरी ओर, जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती गर्मी और शुष्कता वनाग्नि की घटनाओं को बढ़ाती हैं। यह एक दुष्चक्र है, जिसमें दोनों समस्याएं एक-दूसरे को और भी गंभीर बना रही हैं।

समाधान और उपाय

1. वन संरक्षण और पुनर्वास: वन क्षेत्रों में वनस्पतियों की पुनर्वृद्धि और संरक्षण के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए। वन विभाग और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर वनों की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए।
2. जागरूकता और शिक्षा: स्थानीय निवासियों को वनाग्नि के खतरों और इससे बचाव के उपायों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में वन संरक्षण के महत्व पर विशेष पाठ्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए।

3. आधुनिक तकनीक का उपयोग: वनाग्नि का समय पर पता लगाने और उसे नियंत्रित करने के लिए ड्रोन और सैटेलाइट इमेजरी जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए।
4. जलवायु अनुकूलन नीति: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए एक समग्र नीति बनाई जानी चाहिए, जिसमें जल संसाधनों का संरक्षण, कृषि पैटर्न में बदलाव और ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग शामिल हो।
5. स्थानीय समुदाय की भागीदारी: वनाग्नि से निपटने के लिए स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। स्थानीय लोगों को वन संरक्षण में शामिल करके उनकी जीविका के साधनों को भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन की चुनौती उत्तराखंड के लिए एक गंभीर मुद्दा है, जिसे हल करने के लिए एक समग्र और प्रभावी रणनीति की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि हम अपने वनों की सुरक्षा के लिए सामूहिक प्रयास करें और जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए तत्पर रहें। केवल तभी हम अपने प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित कर सकते हैं।

रमेश गौतम के नवगीतों में नदी

डॉ.नितिन सेठी
बरेली

रमेश गौतम प्रख्यात नवगीतकार हैं। उनके नवगीतों में प्रकृति के अनेक सुंदर चित्रण मिलते हैं। पर्वत, सागर, पंछी, हवा, नदी; सभी अपने-अपने मुखरित सौन्दर्य की सार्थक अभिव्यक्ति आपके गीतों में करते दिखाई देते हैं। 'इस हवा को क्या हुआ' आपका नवगीत संग्रह है जिसमें अनेक नवगीतों में प्रकृति का आलम्बन और उद्दीपन शब्दायित हुआ है। आपके नवगीतों को ध्यान से पढ़ने पर पता लगता है कि 'नदी' आपका प्रिय विषय है। नदी पर केन्द्रित लगभग 18 नवगीत आपके संग्रह में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त भी नदी की उपस्थिति अन्य अनेक नवगीतों की पंक्तियों में है। नदी अपने सतत् प्रवाह, गतिशीलता और तरलता-गहनता के गुणों के कारण मानव मन को भी भावों ओर विचारों के प्रांगण में सतत् प्रवाही और सदानीरा बनाने का कार्य करती है। नदी तो मानव की चिर सहचरी है। मानव मन में भी एक नदी है जो आंतरिक अनुभूतियाँ को बहाव देती है, अपनी सुंदरता से मानव मन में भी सौंदर्य का संचार करती है, साथ ही साथ अपने जल की ही तरह मानव मन के विचारों को लोकापयोगी भी बनाती है। हमारे दार्शनिक चिंतन में शायद इसी कारण 'प्रकृतिवाद' भी एक विशिष्ट चिंतन के रूप में उभर कर सामने आया है।

डॉ. रघुवंश लिखते हैं, "परम्परा के अर्थ में समस्त बाह्य जगत् को उसके प्रत्यक्षीकरण की रूपात्मकता में और उसमें अधिष्ठित चेतना के साथ ही प्रकृति माना गया है।" प्रकृति के भिन्न-भिन्न रूपों का भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता है।

रमेश गौतम के नवगीतों में नदी के अनेक रूपों से हमारा परिचय होता है।'नदी की धार' नवगीत में वे लिखते हैं-

पुलों को बाँधने वालों नदी की धार तो देखो
हमारी आँख निर्वसना नदी की देह पर अटकी
हमारे आचरण की नाव, फिर मँझधार में भटकी
अरे माँझी, जरा टूटी हुई पतवार तो देखो

यहाँ बदलते मानवमूल्यों पर करारी चोट करता है कवि। नदी को 'जीवन' का प्रतीक देकर आचरण को उस बिखरती-सिमटती नदी पर नाव की संज्ञा दी गई है। इसी तथ्य को वे 'बोलो 'अन्तर्मन' नवगीत में दोहराते हैं। यहाँ वे एक प्रश्नकर्ता की भूमिका में है और पूछते हैं कि आज मनुष्यता ने सभ्यता की ऊँचाइयाँ तो छूने की कोशिशें की हैं लेकिन इन झूठे दिखावों में हम अपनी जड़ों से कटते चले गये हैं-

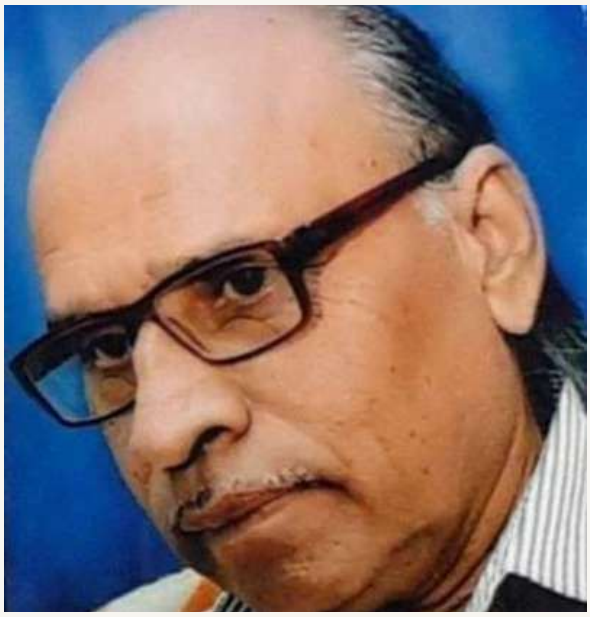

ऐसे खेले खेल निराले सिमट गई है मोक्षदायिनी
खेले नहीं सरोवर के तट, मछली-मछली कितना पानी
पानी, पोखर पनघट वाली, अब तक झूठी कसमें खाईं
बोलो, अन्तर्मन, मरूथल में, लहरें कितनी बार नहाईं

नदी सदैव गतिमान रहती है, जीवनधर्मिता का स्रोत बनती है और अपने मनोभावों को अपनी सतत् प्रवाहमयता से दर्शाती भी है। शायद इसीलिये कवियों की भावनाओं में नदी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रकृति के अचेतन पदार्थ, चेतनामयी हो उठते हैं, यदि कवि की अन्तःसलिला उनसे अपना तादात्म्य स्थापित कर ले। पीड़ा की अनुभूतियों की नदी के प्रवाह में समेटते हुए निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य है-

आँखों के उद्गम से निकली
एक नदी गहरी

करूणा का प्रसार होते ही हमारी आँखों से भी नदिया की धारा बह निकलती है। रमेश गौतम यहाँ करूण रस की उत्पत्ति नदी के बिम्ब से करते हैं। ज्ञातव्य है कि हिन्दी के आचार्यो ने करूण रस का देवता 'वरूण' को माना है। वरूण अर्थात् जल और नदी भी जल की संचित प्रवाहमयी राशि का ही नाम है। अपने नवगीत 'दुख है ऐसा अतिथि' में करूणा का संचार कवि ने इन शब्दों में दर्शाया है-

संवेदन की नदी निकलती जब पर्व रोते
मोती झरी हथेली के आशीष सिद्ध होते
जीवन का सारांश दुखों में ढलकर आता है

यहाँ नदी का अस्तित्व चेतनामयी है। मानवीकरण के सुन्दर प्रयोग द्वारा नदी का कार्य व्यापार द्रष्टव्य है। परंन्तु नदी केवल करूणा का प्रवाह ही नहीं है। रमेश गौतम ने नदी को सदानीरा बने रहने का विश्वास भी अपने काव्य में दिया है। नदी को उसकी बंधन-पीड़ा से मुक्ति देकर उसे सदायौवना बनाने का प्रण कितने सुंदर शब्दों में है-

एक ज़िद है बादलों को बाँध कर लाऊँ यहाँ तक
खोल दूँ जल के मुहाने प्यास फैली है जहाँ तक
धूप में झुलसा हुआ फिर खिलखिलाए नदी का यौवन

नदी पर आये संकट को कवि अपने उद्योग से दूर करना चाहता है। आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में पर्यावरण का जो विनाश हुआ है, वह किसी से भी छिपा नहीं है। सदानीरा की भांति रहने वाली नदियाँ कल-कारखानों के दूषित जल से मैली कर दी गईं या कहीं-कहीं नदी की अविरल धारा को मृतप्राय ही कर दिया गया। प्रकृति का कोई भी अंग समाज विरोधी नहीं है। वह तो सर्वजनहिताय की भावनाओं की साक्षी है। नदी के दो किनारे भले ही परस्पर न मिलेंपरन्तु नदी सदैव समाज को जोड़ती है। नदियों के किनारे बसी नगर सभ्यतायें इसकी गवाह हैं। नदी ने साहित्य से भी अपने रागात्मक सम्बंधों को निभाया है। जीवन के उदात्त भाव साहित्य में स्थान पाते हैं। रमेश गौतम अपने एक नवगीत 'नदी ठहरो' में मानो इन्हीं योजक सम्बधों की पावन बात को लिपिबद्ध करते हैं। वैसे भी कवि में सौन्दर्य दर्शन करने और उसे अभिव्यक्त करने की क्षमता अधिक होती है। इस सम्बन्ध में अज्ञेय लिखते हैं, "कवि के संवेदन पर उसकी दार्शनिक अथवा धार्मिक आस्था के प्रभाव की अनिवार्यता को स्वीकार करके हम प्रकृति वर्णन की परम्परा का अध्ययन कर सकते हैं।" रमेश गौतम लिखते हैं-

नदी ठहरो, तनिक पल भर
सुनो! तटबंध की बातें

आगे की पंक्तियों मे कवि ने नदी की शक्तियों का आह्वान किया है। यहाँ महाकवि कालिदास की 'अभिज्ञानशकुन्तलम्' नाटक में कही गई 'नान्दी' याद आती है-'या सृष्टि स्रष्टुराद्या'। कालिदासने इसमें जलतत्त्व को ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि बताया है। ब्रह्मा की यही प्रथम सृष्टि जलतत्त्व कवि की दृष्टि में प्रथम स्थान का अधिकारी बनकर आया है-

बहो श्वेताम्बरा ऐसे, तटों पर हों हरित उत्सव
धुले सम्वेदना जल की, मरूस्थल में यथासम्भव
तुम्हारे संग रहती हैं, हमारी शुभ सौगातें

कवि ने बड़ी सुदरता से नदी की वंदना करते हुए उसे मानव जीवन के संदर्भों से जोड़ दिया है। नदी के प्रति इतने उदात्त भावों में कोई नवगीत शायद ही लिखा गया हो। कवि ने नदी को पशु-पक्षियों के लिये भी इतना ही उपयोगी माना है। औद्योगिकीकरण के अंधे दौर में नदियों-जलाशयों पर बांध बनाना जरूरी भी है और मज़बूरी भी; परन्तु कवि अपने नवगीतकार होने का कर्त्तव्य निभाता है। नवगीत लोकसंपृक्त होता है। महानगरीय बोध की प्रताड़नायें कवि को उद्धेलित करती हैं। डॉ. माहेश्वर तिवारी संग्रह की भूमिका में इसे यूँ लिखते हैं,"कविता का कार्य सिर्फ अनुरंजन नहीं है। वह समाज को प्रेरित और जाग्रत करने की भूमिका का भी निर्वहन करती है। लगभग इसी तरह की भूमिका में रमेश गौतम ने पर्यावरण चिंतन से जुड़े कुछ गीत लिखे हैं।" रमेश गौतम लिखते हैं-

पहले प्यास बुझे हिरनों की
तब अरण्य से नदी मोड़ना महानगर

गौरय्या भी एक घोंसला रख ले
इतनी जगह छोड़ना महानगर

समष्टिगत पीड़ा यहाँ बड़ी ही सुंदरता से स्थान पाती है। नदी के साथ-साथ गौरय्या, हिरन जैसे जीवों की जिंदगी भी कवि की दृष्टि में है। रमेश गौतम के नवगीतों में नदी रहस्यात्मक रूप से भी अवस्थित है। प्रेम में रहस्यात्मकता का आरोप करती निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिये-

मान जा मन छोड़ दे अपना हठीलापन
मानते उस पार तेरी हीर है
यह नदी जादू भरी जंजीर है
तोड़ दे प्रण सामने पूरा पड़ा जीवन

नदी को जादू भरी जंजीर कहकर एक विशिष्ट रहस्य की अभिव्यक्ति कवि करता है। अक्सर काम की तलाश में व्यक्ति अपना घर-गाँव छोड़कर परदेस में प्रस्थान करता है। दूसरी दुनिया के सुख को कवि ने 'हीर' से सम्बोधित किया है। परदेस के रहस्यों की सुन्दर अभिव्यंजना की गई है। 'नदी अकेली रहती है' में नदी की अन्तर्पीड़ा का अनुवाद है। यहाँ प्रतीकों के माध्यम से कवि ने अपनी बात कही है-

कहाँ माधुर्य वंशी का, नदी के भाग्य में सुनना
बहुत रोती पटक कर सिर, तटों से आजकल यमुना
सहस्रों कालियादह में, नदी रहती अकेली है

नदी को यहाँ स्त्री का प्रतीक माना जा सकता है। क्रूर-कुटिल समाज कालियादह की भूमिका में है। वंशी उस माधुर्य गुण का प्रतीक है जिसके द्वारा समाज में अपनत्व का संचार होता है। एक नवगीतकार के रूप में कवि ने नदी का सार बड़ी गहराई से पकड़ा है। नदी के कल-कल में उसके कल की विकलता-व्याकुलता विशिष्ट रूप से 'जानती है सच नदी भी' नवगीत में अभिव्यंजना पाती है। दोषारोपण की सहज मानवीय प्रवृत्ति पर एक प्रश्नचिन्ह लगाता प्रस्तुत गीत वर्तमान 'सरकारी व्यवस्था' की पोल भी खोलकर रख देता है-

जानती है सच नदी भी लोग क्या कहते कहानी
जल-प्रलय पर फिर रचे हैं, राजनीति ने स्वयंवर
फिर नदी की मुँह दिखाई में करोड़ों की निछावर
फिर नदी के मान-मर्दन की वही रस्में पुरानी

लोकपीडा, प्रकृतिपीड़ा को अपनी पीड़ा समझने वाले नवगीतकार रमेश गौतम नदी की बहती लहरों पर अपने नवगीतों के शब्दों का ऐसा तटबंध बाँध देते हैं कि पाठक उनके गीतों के सहज प्रवाह से आप्लावित हो उठता है।

इसी प्रकार गंगा की आत्मकथा-सा लगता नवगीत 'एक मटमैली नदी हूँ' में नदी का नाद, आर्त्तनाद बनकर मौन-सा हो गया है-

पुण्य का व्यापार करते घाट पर पण्डे पुजारी
हर लहर के पाँव से मोती जड़ी पायल उतारी
इस नगर से उस नगर तक, मौन बहती त्रासदी हूँ
मत कहो गंगा मुझे मैं एक मटमैली नदी हूँ

नदी को सदैव अपने तटबंधों की सीमाओं में रहकर बहना है। उसकी मज़बूरी है कि सामान्य परिस्थितियों में वह अपनी मर्यादा में रहती है। नदी की नैतिकता; समानता-न्याय-निरपेक्षता जैसे गुणों को अपनी अविराम यात्रा में साथ-साथ लेकर चलती है। कवि इसे 'ध्वनि पर्व' की खूबसूरत संज्ञा देता है। 'एक नदी बनकर' नवगीत में नदी का मानो पूरा दर्शन ही समाहित हो गया है-

एक नदी बनकर संवेदना, बहना अन्तर्मन के पास
कल-कल ध्वनि पर्वों को साधना आए न किंचित अवरोध
यात्रा में भावुक मंदाकिनी अधरों पर रखना युगबोध
अस्ताचल सूरज के साथ कहीं डूबे न हिरनों की प्यास

नदी की निश्छलता, निःस्पृहता, निशब्दता, निःस्वार्थता यहाँ द्रष्टव्य भी है और अनुकरणीय भी। नदी की सच्ची सम्वेदनाओं का इससे अधिक सफल शाब्दीकरण और क्या होगा। स्वयं रमेश गौतम के शब्दों में "संवेदना को शब्दों में प्रतिबिंबित होना चाहिए। गीत हमारी इन्हीं अनुभूतियों का चितेरा रहा है जिसमें आनंद और अवसाद दोनों का अनवरत प्रवाह विद्यमान रहा है। हमारा हर संवेदना क्षण गीतों में जीवंत हुआ है।" कहना न होगा कि रमेश गौतम ने नदी की हर एक सम्वेदना को अपने इन नवगीतों में प्रवाहमयता प्रदान की है। यह प्रवाहमयता जितना इन नवगीतों को विशिष्ट बनाती है, उतना ही काव्यरस के अमरजल से पाठकों को भी अभिरसमय कर देती है। नदी की गहराई जैसे ये नवगीत अपने शब्दों में असंख्य भावों की ऊर्मियाँ समेटे हुए हैं।

ताज़े पानी की झील -

करेरी झील

डॉक्टर जय महलवाल(अनजान)
राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा में उत्तर पश्चिम धौलाधार के दक्षिण में 3110मीटर ऊंचाई पर स्थित करेरी झील एक ताज़े पानी की झील है। इस झील को ट्रेकिंग के जरिए पहुंचा जा सकता है।समय सुबह के 3:45 दिनांक 16 अप्रैल 2024 और हम चल पड़े धर्मशाला के सिद्ध बाड़ी से कांगड़ा जिले की प्रसिद्ध झील करेरी की यात्रा पर। क्योंकि हम पहली बार करेरी झील की यात्रा पर जा रहे थे इसलिए हमें रास्ते का पूर्ण ज्ञान नहीं था। किसी अपने दोस्त से रास्ते का पता किया तो उन्होंने बताया कि एक रास्ता वाया शाहपुर होकर जाता है और दूसरा धर्मशाला बस स्टैंड से नीचे वाया घरोह होकर जाता है, दोनों रास्ते ठीक हैं। इसलिए हमने भी घरोह वाले रास्ते को चुना और अपनी गाड़ी में चल दिए सुबह-सुबह 3:45 पर। जैसे ही हम घेरा से 2 किलोमीटर पीछे थे तो आगे बड़े-बड़े पत्थर सड़क पर गिरे हुए थे, क्योंकि हम तीन लोग थे तो इसलिए दो लोगों ने पत्थरों को बड़ी मुश्किल सड़क से एक तरफ किया और अपनी कार से आगे चल दिए।

अभी थोड़ा सा ही आगे गए थे कि सड़क में फिर से पत्थर गिरे हुए मिले, उन पत्थरों को भी मुश्किल से हमने इधर-उधर करके कार को ज्यूँ त्यूं आगे निकला। साथ में एक खड्ड बह रही थी जिसमें कि बहुत ज्यादा पानी था और बहुत ज्यादा साएं–साएं की आवाज आ रही थी। घेरा से आगे जैसे ही हम आगे बढ़े तो रास्ते में खड़ी चढ़ाई और कैंचियों को देखकर थोड़े से शकपका गए, कि कहीं आगे रास्ता और भी खतरनाक ना हो। जैसे तैसे हम आगे बढ़ते गए तो करेरी स्टेशन से लगभग डेढ़ किलोमीटर पीछे एक बहुत बड़ा लैंड स्लाइड हुआ था। जिसके कारण रोड पूर्णता बंद हो गया था। क्योंकि अभी सुबह के 6:00 रहे थे तो उस सड़क मार्ग को खोलने के लिए कोई भी वहां मौजूद नहीं था। हमने अपनी गाड़ी को पीछे की तरफ मोड़ा और लगभग आधा किलोमीटर पीछे खड़बी
नामक स्थान पर पार्क कर दिया और यहां से शुरू हुई हमारी पैदल यात्रा करेरी झील के लिए।

सबसे पहले हम करेरी नामक जगह पर पहुंचे जहां से हमें एक कुत्ता साथ में मिल गया। वह कुत्ता हमारे साथ-साथ चलने लगा तो हमने भी कुत्ते को दो-चार बिस्किट खाने के लिए दे दिए। किसी व्यक्ति से हमने पूछा कि करेरी झील के लिए कहां से रास्ता जाता है तो उन्होंने बताया कि लगभग 3 किलोमीटर दूर एक पुल आएगा नौहली नामक स्थान पर, जहां से आपको ऊपर के लिए रास्ता चढ़ने के लिए मिलेगा। अब अब हम तीन के बजाय चार हो गए थे क्योंकि कुत्ता हमारे साथ-साथ चला था और हमें कुत्ते के नाम का पता नहीं था इसलिए हमने कुत्ते का नाम टाइगर रख दिया। जैसे हम उसको टाइगर के नाम से पुकारते हैं वह भी पूंछ हिलाता हिलाता हमारे साथ-साथ चल देता। लगभग सुबह के 7:00 बजे हम उस पुल के पास पहुंच गए जहां से हमें करेरी झील के लिए खड़ी चढ़ाई वाला रास्ता दिखा। वहां पर तीन-चार दुकाने थी और वहां हमने चाय पी और अपनी यात्रा शुरू कर दी। वहां पर एक साइन बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था करेरी झील में आपका स्वागत है और यह झील 3110 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। दुकानदार ने कहा कि क्या आप आज ही वापिस आएंगे? हमने कहा कि हम जरूर वापस आएंगे आज ही ।तो उन्होंने कहा कि आप नहीं आ सकते हैं रास्ता बड़े ऊपर तक जाता है, एक दिन में आना मुश्किल होता है। हमने कहा चलिए जो भी बात होगी देखा जाएगा। बातें करते-करते हम जब आधा किलोमीटर दूर पहुंचे ही थे तो हमें ऊपर से वापस आते हुए दो व्यक्ति मिले जो कि लगभग 55 से 60 वर्ष की उम्र के लग रहे थे। हमने उनसे बातचीत की तो उन्होंने बताया कि हम डेढ़ किलोमीटर ऊपर से ही वापस आ गए हैं क्योंकि ऊपर एक बहुत खतरनाक नाला बह रहा है जिस पार करना हमारे लिए असंभव है। इसलिए हम वापस आ गए। मैंने उनके बोलचाल से थोड़ा सा अंदाजा लगाया और मैंने पूछा क्या आप बिलासपुर या हमीरपुर से हैं तो उन्होंने बताया कि वो हमीरपुर से हैं। उन्होंने कहा कि वह सुबह 6:00 बजे ट्रैकिंग के लिए चले थे लेकिन अब वापस आ रहे हैं, तो मैंने उनसे कहा कि चलिए आप हमारे साथ चलिए, हम आपका साथ निभाएंगे। वह हमारी बातें मानकर हमारे साथ चल तो दिए लेकिन लगभग 5 मिनट चलने के बाद ही वह दोनों व्यक्ति मुझे आवाज लगाते हुए बोले कि ठीक है श्रीमान जी हम वापिस जा रहे हैं । हम नहीं जा सकते हैं, तो मैंने भी उन्हें अलविदा कहा और हम अपने रास्ते में आगे चल दिए। फिलहाल हमें रास्ता ठीक-ठाक ही लग रहा था। जैसे ही हम सड़क से लगभग डेढ़ किलोमीटर ऊपर झील कैफे पहुंचे, तो वहां पर वह खड्ड रूपी नाला हमने अपने सामने पाया। वहां पर एक व्यक्ति और खड़ा था तो हमने उससे पूछा कि क्या कोई और लोग भी ऊपर गए हैं,तो उन्होंने कहा कि पिछले रात को बहुत भयंकर बारिश हुई थी ,जिसकी वजह से जलस्तर बहुत बढ़ गया है और आज फिलहाल अभी तक कोई भी व्यक्ति ऊपर की तरफ यात्रा पर नहीं गया है।

थोड़ी देर सोच विचार करने के बाद हमने मन बनाया की हम जरूर करेरी झील तक पहुंचेंगे और हमने अपने जूते और मौजे उतारे और उस खतरनाक खड्ड रूपी नाले को जैसे– तैसे पर किया। टाइगर ने उसे नल को क्रॉस करने की कोशिश की लेकिन उसे सफलता हाथ नहीं लगी। हमने भी अपने जूते पहने और टाइगर को कहा कि यहां तक हमारा साथ निभाने के लिए शुक्रिया । अब आप वापिस जाओ और हम अपनी मंजिल की तरफ आगे बढ़ गए। अभी हम लगभग एक किलोमीटर ऊपर ही चढ़े होंगे कि टाइगर वापस हमारे साथ चल पड़ा, न जाने उसने कैसे वह नाला क्रॉस किया और वह बड़ा खुशी-खुशी से हमारे साथ हमसे आगे आगे हमें रास्ता दिखाने के लिए चला रहा। हम थोड़ी देर विश्राम के लिए बैठ गए तो हमने टाइगर को टाइगर बिस्किट खिलाए। फिर हम अपनी यात्रा की तरफ ट्रैकिंग पर चल पड़े। क्योंकि चढ़ाई खड़ी थी और रास्ता ऊबड़– खाबड़ था और अभी तक हमें रास्ते में कोई साइन बोर्ड भी नहीं मिला था कि रास्ता इस तरफ से है ! इसलिए हम लोगों ने हाथ में एक-एक डंडा भी ले लिया सहारे के लिए ताकि थकान ज्यादा महसूस ना हो। जैसे जैसे हम आगे बढ़ते गए रास्ते में दुकाने भी मिलती गई। दुकानदार से बातचीत करने के बाद हम यात्रके लिए आगे बढ़ते रहे। क्योंकि अब धूप निकल चुकी थी तो पसीना पढ़ना स्वाभाविक था, इसलिए हमने अपनी जैकेट उतार कर अपने बैग में डालकर, अपनी मंजिल की तरफ आगे बढ़ गए। अब हम सफर में तीन नहीं चार लोग थे हमारे साथ टाइगर भी था। लगभग 2 घंटे चलने के बाद हमें आगे एक और बहुत ही खतरनाक और बहुत बड़ा खड्ड रूपी नाला दिखाई दिया जहां से रास्ते का अनुमान लगाना असंभव था कि आगे किस तरफ रास्ता होगा ? टाइगर ने वह नाला क्रॉस किया और हम लोग भी टाइगर के पीछे-पीछे उसे नाले को एक दूसरे का हाथ पकड़ कर क्रॉस करने के बाद आगे बढ़ गए। रास्ते के बीच-बीच में हम बातों से एक दूसरे को साहस देते रहे। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद ज्यों ही हम आगे बढ़े, लगभग आधा किलोमीटर बाद रास्ते में एकदम से धुंध इस तरह से छा गई जैसे मानो सारे बादल ही हमारे ऊपर उमड़ पड़े हों। हमको वापस अपनी जैकेट बैग से निकाल कर पहननी पड़ी । क्योंकि मौसम बहुत ठंडा हो चुका था। अचंभित करने वाली बात यह थी कि अभी तक हमें कोई भी व्यक्ति ऊपर से नीचे की तरफ आने वाला नहीं मिला था।

लगभग 2 किलोमीटर और चलने के बाद तीन लड़के और तीन लड़कियां हमें वापस आते हुए मिले। जैसे ही उनसे बातचीत हुई, उन्होंने बताया कि आगे एक टेंट है जिसमें हम पिछली रात को रुके थे क्योंकि पिछली रात को भयंकर बारिश हुई थी और आगे एक और नाला है जिसमें पानी का बहाव बहुत तेज है तो हम उस बहाव को देखते हुए डर गए और अब वापिस आ रहे हैं। उनकी बातें सुनकर मेरे दो साथियों की हिम्मत थोड़ी सी टूट गई और वह भी कहने लगे कि हम भी वापस चलते हैं। क्योंकि जान तो सबको अपनी-अपनी प्यारी होती है। मैंने उनसे कहा की हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, क्योंकि हम तीन नहीं हमारे साथ टाइगर भी है तो हम चार हैं और रास्ते की हमें कोई अब फिक्र नहीं क्योंकि टाइगर हमें रास्ता खुद-ब-खुद दिखा रहा है। थोड़ा विश्राम करने के बाद हम फिर से अपनी मंजिल की तरफ बढ़ चले। आगे हमें एक टेंट दिखाई दिया तो दिल में थोड़ी सी हिम्मत आई और वहां पर दुकानदार से जब पता किया तो उन्होंने कहा कि आगे एक पुल आएगा और उसके बाद लास्ट पॉइंट पर आपको खड्डु क्रॉस करनी पड़ेगी और उसके बाद झील है। उसकी बातें सुनकर हमें थोड़ी हिम्मत आई। हम आगे बढ़ते गए और चार लड़के हमें रास्ते में करेरी झील से वापस आते हुए मिले। क्योंकि हम बहुत थक चुके थे इसलिए हम एक बहुत बड़े पत्थर पर विश्राम करने बैठ गए थे, हमने उन लड़कों से बात बातचीत की तो उन्होंने बताया कि अभी आपने आधा रास्ता ही चढ़ा है। अभी इसके बाद इतना ही रास्ता और है और अब खड़ी चढ़ाई है।

उन्होंने यह भी बताया कि झील से लगभग 1 किलोमीटर नीचे बेस कैंप है, जहां पर चार-पांच टेंट लगे हुए हैं और वहां पर ठहरने की व्यवस्था भी है। अब हमने अपनी यात्रा शुरू कर दी, यहां पर हमने पाया कि यह जो खड्डु है यह करेरी झील से ही निकले हुए पानी और उसके आसपास के नालों से बनी हुई है। रोमांचकारी इस यात्रा में एक पल में कहीं धूप तो दूसरे पल में गहरी धुंध तथा अगर ऊपर की तरफ नजर डालें तो सुंदर-सुंदर बुरांश के फूल एवं देवदार के बहुत बड़े-बड़े पेड़ दिखाई देते हैं। प्राकृतिक सुंदरता को देखते ही हमारा मन प्रफुल्लित और आनंदित हो जाता है। अब हम पहाड़ के टॉप पर लगभग पहुंच चुके थे, हमें पीछे मुड़कर देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था। दोपहर के 1:30 बजे हम उसे खड्डु के किनारे बड़े-बड़े पत्थरों पर बैठकर अपना भोजन कर रहे थे तो ऊपर से हमें तीन व्यक्ति आते हुए और मिले। जब हमने उनसे बात की और पूछा कि अब कितना दूर है तो उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि यह हमारे साथ गाइड है आप इसे पूछ सकते हैं। जैसे ही मैंने उसे गाइड से पूछा कि ऊपर कैसा मौसम है और क्या हम आज वापिस आ सकते हैं तो उस इंसान ने हमें कुछ भी नहीं बताया। वह उन अपने दो सैलानियों के साथ नीचे की तरफ चुपचाप चला गया। हमने तब सोचा कि यह गाइड है यह तो पैसे लेता है ऊपर पहुंचाने के लिए। लेकिन बतौर इंसानियत क्या वो हमें रास्ते के बारे में नहीं बता सकता था या मौसम के बारे में नहीं बता सकता था? इससे अच्छा तो हमारा टाइगर ही निकला जो हमारा पूरा साथ दे रहा था। हमारे लिए यह बहुत ही सोचनीय प्रश्न था। चलिए जो भी हुआ सो हुआ लेकिन हमने टाइगर (हमारा गाइड)के सहारे बाकी बचा रास्ता भी पूरा करने की ठान ली थी। झील से लगभग 3 किलोमीटर पीछे जब हम पहुंचे तो मेरे दोनों साथियों ने जवाब दे दिया कि अब हम इसके आगे नहीं जा सकते हैं। हमें इतनी ज्यादा थकान हो गई है कि हम अब वापिस ही जाएंगे। मैंने कहा जब हम इतनी ऊपर आ ही गए हैं तो अब झील के दर्शन करके ही जाना चाहिए । मैंने जैसे कैसे उनका ध्यान बातों में उलझा के, उनको हिम्मत बंधा के ,आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। बहुत मुश्किल से वह आगे चलने के लिए तैयार हुए। लगभग 1 किलोमीटर ही अभी हम चले हुए होंगे कि अचानक से हमारी आंखों के आगे अंधेरा छा गया ,चारों तरफ धुंध ही धुंध छा गई और एकदम से बारिश लगना शुरू हो गई। हमारे पास दो छाते थे, हमने वह निकाले और धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू हो गए लेकिन बारिश इतनी तेज हो गई कि लगभग 3 मिनट बाद बड़े-बड़े ओले हमारे सिर पर पड़ने शुरू हो गए। अब बारिश कम और ओले ज्यादा पढ़ रहे थे तो मैंने उनको कहा कि जरूर ऊपर बर्फबारी हो रही होगी क्योंकि मौसम में बहुत ठंडक आ गई थी और तापमान गिर चुका था।

उन्होंने फिर हिम्मत हारी और कहा कि अब हम इसके आगे नहीं जाएंगे और एक बहुत बड़े पत्थर के नीचे हम लोग खड़े हो गए। ऐसे मौसम को देखते हुए एक पल में मैं भी सोचने पर मजबूर हो गया कि हम गलत आ गए हैं, आज हम फंस चुके हैं। हमें वापिस जाने के लिए भी लगभग तीन घंटे का समय लगेगा क्योंकि हम बहुत थक चुके हैं। ऊपर से वापिस जाती बार हमें समय का भी विशेष ध्यान रखना होगा ,चूंकि रात होने वाली थीऔर उन नालों को क्रॉस करने के लिए हिम्मत भी चाहिए क्योंकि बारिश हो रही है तो जलस्तर कभी भी बढ़ सकता है। ऊपर झील के पास खास बात यह भी रही कि जब तीन ही बज रहे थे तो हमको ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लगभग छह बज गए हैं।ऐसे सारे प्रश्न मेरे मन में कौंध रहे थे? ओलावृष्टि थोड़ी सी कम हुई, तो मैंने उनको कहा कि चलो अब थोड़ी ही दूर है झील, तो हम वहां तक जाकर ही आते हैं! ऐसे मौके बार-बार नहीं मिलते हैं!

क्रमशः अगले अंक में .....

प्रीति चौधरी"मनोरमा"

बुलंदशहर
उत्तर प्रदेश

गीत- नहीं तुम वृक्ष काटना

मनुज नहीं तुम वृक्ष काटना,
ये ही देते हैं छाया।
हरी भरी है इनसे धरती,
ये जीवों का सरमाया ।।

नीड़ बनाते इन पर पक्षी,
ये ही तो उनका घर हैं।
आश्रय पाते इनमें ये खग,
वृक्ष बने ये सहचर हैं।
लालच में अंधे हो करके,
हाथ कुल्हाड़ी ले ली क्यों?
भौतिकवादी इस कलयुग में ,
सबको प्यारी है माया।
मनुज नहीं तुम वृक्ष काटना,
ये ही देते हैं छाया।

हे निष्ठुर! हे क्रूर मनुज! तुम,
क्यों पीड़ा के हो दाता।
क्यों आखिर तरुओं को काटो,
किंचित तरस नहीं आता।
जीवन कई लील लेते हो,
तुमको कब पीड़ा होती?
बढ़ते हाथों का रुक जाना,
तुमको कभी नहीं भाया।
मनुज नहीं तुम वृक्ष काटना,
ये ही देते हैं छाया।।

तुम्हें चाहिए रोज़ी रोटी,
तुम्हें दर्द का क्या अनुभव?
चाहे उजड़े बया घोंसला,
करुण करे कोई कलरव।
लाभ-हानि में जीने वाले,
क्या जानें परहित क्या ?
भूख मिटाना ध्येय रहा है,
भटक रही यूँ ही काया।
मनुज नहीं तुम वृक्ष काटना,
ये ही देते हैं छाया।

तुम कब समझो पीर विटप की,
कहाँ देखते खग क्रंदन।
पाषाणों में रहने वाले,
हृदय करे कब स्पंदन।।
प्रस्तर में तुम खोजो ईश्वर,
नहीं उसे पहचान सके।
सदियों से तुम भू के शासक,
जीव जंतु हर घबराया।
मनुज नहीं तुम वृक्ष काटना,
ये ही देते हैं छाया।

नमिता राकेश
प्रसिद्ध साहित्यकार
नयी दिल्ली

पेड़ मत काटो

देखो भाई !
पेड़ मत काटो
काटना है
तो
उन दरिंदों के सर काटो
जो रात दिन
मासूम लोगों का
खून बहाते हैं
पेड़ काटने से
तुम्हें क्या मिलेगा
किसका भला होगा
पेड़ काटने से
पेड़ों को भी
दुख मिलता है
लहू रिसता है
पर
उनका बहता लहू
तुम्हें क्यों दिखाई देगा
तुम्हारी आंखों पर तो
पट्टियां बंधी हैं
स्वार्थ की
अब भी संभल जाओ
पेड़ लगा कर देखो
लाखों लोगों का
जीवन बचाओगे
कुछ तो पुण्य कमाओगे

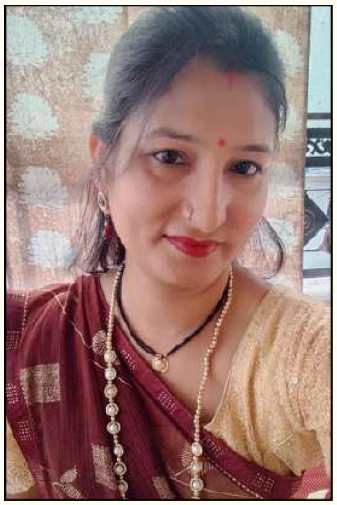

रेणु सिंह राधे
कोटा, राजस्थान

बहुत दिन हो गए थे उगता सूरज देखे
आज देखा तो महसूस हुआ
एक जरा सी नींद के लिए मेंने
जानें क्या क्या ही खोया .....

लाल मद्धम रोशनी में नहाया
साफ सुथरा बेदाग आसमान
जीवन दान देने को आतुर
ठंडी ठंडी रेशमी सी हवाएं.....

अपने सुर ताल पर नाचते
पंछियों की दिल कश अदाएं
अपने सुनहरे भविष्य को देखते
सवारते सजग नौजवान, बच्चे....

उन सब में थोड़ी फुर्सत पा
अपने निकल आए पेट को
कम करने की जद्दोजहद
करती कुछ मेरी जैसी ग्रहणी.....

कितना कुछ पा सकते हो
सूरज के साथ उठ कर देखो
भागदौड़ भरे पूरे दिन में से
कुछ लम्हें अपने लिए जी कर देखो.....

मीता लुनिवाल "मीत"
जयपुर, राजस्थान

पर्यावरण संरक्षण

आओ हम ये संकल्प करें
पर्यावरण को नष्ट होने से बचाएगे
जगह जगह हम पेड़ लगाए
नये नये पेडो से धरती को सजाएगे
देकर नवजीवन इस प्रकृति को
इसका अस्तित्व बचाए,

ऑक्सीजन देते पेड़ हमें और आज
पेड़ो की कटाई निरन्तर हो रही
मौसम चक्र बिगड़ गया असमय
वर्षा, आंधी तूफान सर्दी,गर्मी
इंसान अपने किये का भुगत रहा
जंगल सारे खत्म किए ,पर्यावरण
को बर्बाद किया अपने स्वार्थ
के खातिर जंगल के जंगल उजाड़ दिए,

पेड़ हमे फल-फूल ,औषधियाँ देते
पशु पक्षीयों को आसरा देते
पेड़ो से ही वर्षा होती
होता वातावरण शीतल,निर्मल
पर्यावरण को बचाना है
संकल्प यही उठाना है।

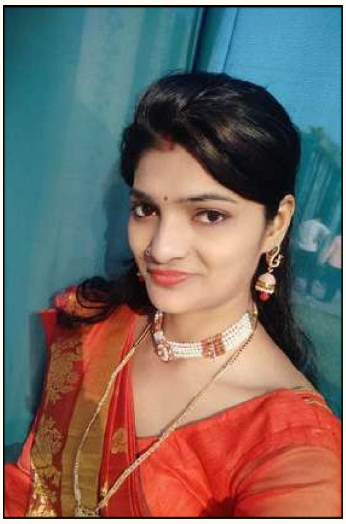

आशी प्रतिभा दुबे
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

आओ पेड़ लगाए हम

धरा पुकार रही है तुमको
नित्य उजड़ रहे है उपवन,

तापमान में हो रही है वृद्धि
निरंतर कटते वृक्षों के कारण
नित बढ़ रहा है वायु प्रदूषण,
समय अभी शेष है थोड़ा
सब कुछ हाथ हमारे ही है,
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु,
मिलकर कदम उठाओ हम !
" आओ पेड़ लगाए हम " ।।

पेड़ नही होंगे तो धरती पर
तुम मिट्टी कहा से लाओगे
हवा ,भोजन, जल के बिना
कहा तुम भी रह पाओगे!
बिना पेड़ पौधों के जीवन,
ये संभव नहीं हमारा भी
पशु पंछी सबका गुजारा भी
सबकी भलाई हेतु ही धरा पर ,
नेक कर्म करते जाए हम सब !
"आओ पेड़ लगाए हम "

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

सुनो धरा की करुण पुकार

हरी-भरी ये ,शस्य श्यामला धरा हमारी,
आओ करें.. हम इसका श्रृंगार..।
मत करो ..प्रदूषित इसको,
सुनो धरा की, करुण पुकार।

अन्न ,फल, फूल, देती हमको,
यह है ,हम सबकी पालनहार।
शीतल जल, शुद्ध वायु है देती,
यह है हमारी, प्राण आधार...।

अमूल्य रत्नों की ,खान है ये,
मत करो, इसका तिरस्कार।
बंजर होने से, बचा लो इसको,
पेड़ काटकर, मत करो वनों का नाश।

कूड़ा, करकट, प्लास्टिक से बचाओ,
तुम सब मिलकर, रखो ध्यान..।
विकास के नाम पर, विनाश हो रहा,
मत करो ,पृथ्वी मां के सीने पर प्रहार।

आओ आज हम ,शपथ उठाएं,
पृथ्वी मां को, नहीं करेंगे जार- जार।
वृक्ष लगाए ...हरियाली लांये..,
लौटायें धरा का, सौंदर्य अपार।

उल्टे अक्षरों से लिख गई भागवत गीता

किताबें और जादू : पियूष गोयल

दुनिया में एक से एक कलाकार मौजूद है जिनकी प्रतिभा देखकर लोग चमत्कार समझने लगते है। ऐसे ही एक कलाकार ने पांच तरह की पुस्तकों को लिखकर चौका दिया है। लेखक पीयूष गोयल ने उल्टे अक्षरों में गीता, सुई से मधुशाला, मेंहंदी से गीतांजलि, कार्बन पेपर से पंचतंत्र के साथ ही कील से पीयूष वाणी लिख डाली। 56 वर्षीय पीयूष गोयल अपने धुन में रमकर कुछ अलग करने में जुटे कि शब्दों को उल्टा लिखने में लग गए। इस धुन में ऐसे रमे कि कई अलग–अलग सामग्री से कई पुस्तकें लिख दीं।डिप्लोमा इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग का पढ़ाई करने वाले पीयूष गोयल का 2000 में एक्सीडेंट हो गया था। उन्हें इस हादसे से उबरने में करीब नौ माह लग गए। इस दौरान उन्होंने श्रीमद्भगवद गीता को अपने जीवन में उतार लिया। जब वे ठीक हुए तो कुछ अलग करने की जिजीविषा पाले वे शब्दों को उल्टा (मिरर शैली) लिखने का प्रयास करने लगे। फिर अभ्यास ऐसा बना कि उन्होंने कई किताबें लिख दीं। इसके साथ ही पीयूष गोयल ने सुई से मधुशाला लिख दी। हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' को सुई से मिरर इमेज में लिखने में करीब ढाई माह का समय लगा। गोयल की मानें तो यह सुई से लिखी 'मधुशाला' दुनिया की अब तक की पहली ऐसी पुस्तक है जो मिरर इमेज व सुई से लिखी गई है।

मेंहदी कोन से लिखी गई गीतांजलि

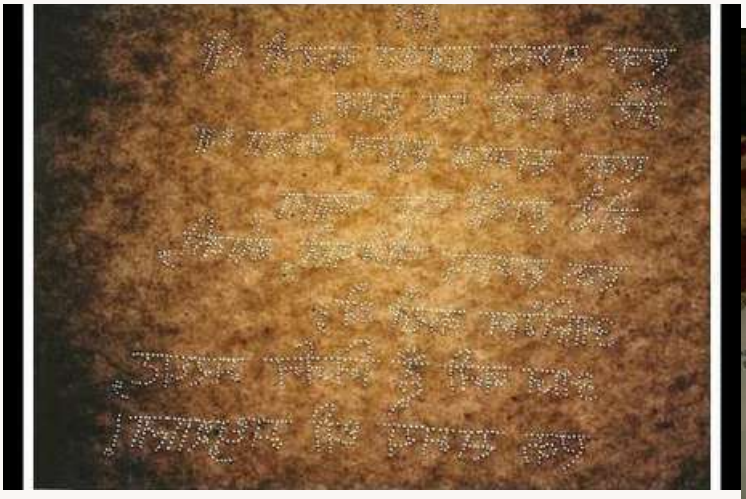

सुई से मधुशाला

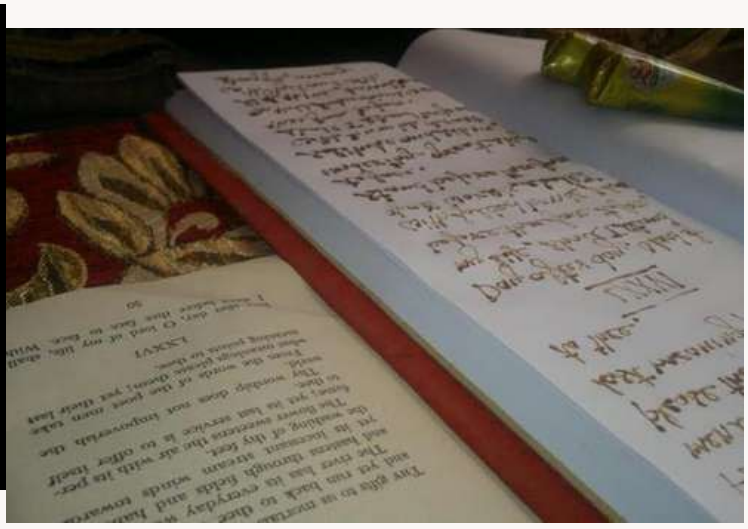

कील से लिखी 'पीयूष वाणी'

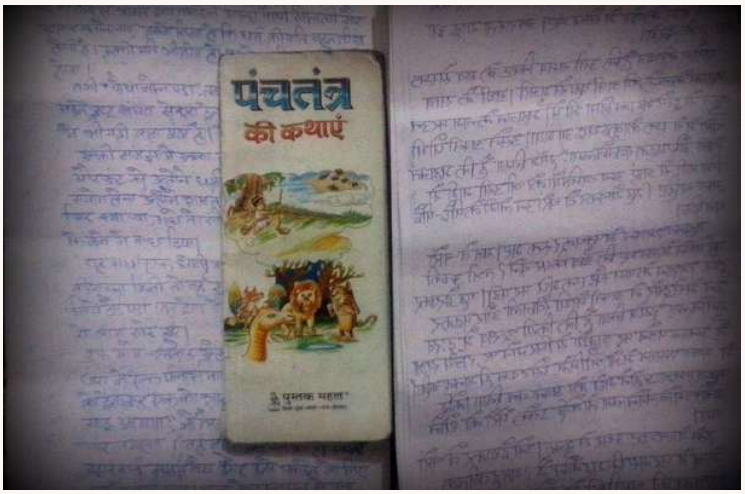

कार्बन पेपर की मदद से लिखी 'पंचतंत्र'

पीयूष गोयल ने 1913 के साहित्य के नोबेल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर की विश्व प्रसिद्ध कृति 'गीतांजलि' को 'मेंहदी के कोन' से लिखा है। उन्होंने 8 जुलाई 2012 को मेंहदी से गीतांजलि लिखनी शुरू की और सभी 103 अध्याय 5 अगस्त 2012 को पूरे कर दिए।इसको लिखने में 17 कोन तथा दो नोट बुक प्रयोग में आई हैं।

अपनी ही लिखी पुस्तक 'पीयूष वाणी' को कील से ए-फोर साइज की एल्युमिनियम शीट पर लिखा है। पीयूष ने पूछने पर बताया कि कील से क्यों लिखा है ? तो उन्होंने बताया कि वे इससे पहले दुनिया की पहली सुई से स्वर्गीय श्री हरिवंशराय बच्चन जी की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'मधुशाला' को लिख चुके हैं। तो उन्हें विचार आया कि क्यों न कील से भी प्रयास किया जाये सो उन्होंने ए-फोर साइज के एल्युमिनियम शीट पर भी लिख डाला।

गहन अध्ययन के बाद पीयूष ने कार्बन पेपर की सहायता से आचार्य विष्णुशर्मा द्वारा लिखी 'पंचतंत्र' के सभी (पाँच तंत्र, 41 कथा) को लिखा है। पीयूष गोयल ने कार्बन पेपर को (जिस पर लिखना है) के नीचे उल्टा करके लिखा जिससे पेपर के दूसरी और शब्द सीधे दिखाई देंगे यानी पेज के एक तरफ शब्द मिरर इमेज में और दूसरी तरफ सीधे।